ओमशान्ति मीडिया
मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित
वर्ष - 16 अंक - 19 जनवरी-I, 2016 पाक्षिक माउण्ट आबू ‘8.00

मानवता के विधान के विधाता

भारत की भूमि देवदूतों से भरी पड़ी है। हम ये नहीं कहते कि रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद जी व महर्षि दयानंद सरस्वती या अन्यानेक आत्मायें महान नहीं थीं, महान थीं, लेकिन एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने अपनी सम्पूर्ण संतति, संतान व सम्पत्ति को एक सेकेण्ड में विश्व कल्याणार्थ समर्पित कर अपना नाम उन देवदूतों में लिखवाया जिनसे सृष्टि की शुरुआत होती है।

भारत की देवभूमि को हज़ारों ऋषियों की तपस्थली का भी नाम देते हैं। उसी तपस्थली में एक तपस्थली माउण्ट आबू राजस्थान है, जहां पर एक कालजयी व्यक्तित्व द्वारा विश्व नवनिर्माण का इतिहास परमात्मा ने रचा और उस व्यक्तित्व का नाम दिया प्रजापिता ब्रह्मा। जैसे प्रत्येक धर्म में कोई न कोई धर्म का प्रथम पुरोधा अवश्य होता है, वैसे ही सम्पूर्ण विश्व और उससे जुड़ी मानवता के आध्यात्मिक उत्थान हेतु परमात्मा ने हम सबके बीच से ही एक श्रेष्ठ मानव का चयन किया जो शांति और सद्भाव को लेकर कार्य करता है। जब भी उसकी जीवनी लिखी जाती है तो उसके गुणों के बारे में जितना कुछ लोग कहते हैं उससे वह कहीं अधिक होता है। ऐसे ही मानव धर्म के मसीहा जिनका नाम चिरकाल तक अमर रहेगा, जिसके द्वारा सम्पूर्ण मानवता को आध्यात्मिक मूल्यों से सर्वश्रेष्ठ बनाने का एक वृहद कार्य परमात्मा ने किया, का नाम है दादा लेखराज।

कालचक्र बदला

प्रथम विश्व युद्ध के त्रास के पश्चात् अंग्रेज प्रशासन काल में जब भारत जकड़ा हुआ था उस समय चारो तरफ अकाल, भूखमरी व प्राकृतिक आपदाओं का माहौल था, ऐसे समय में एक परा शक्ति (परमात्मा) ने सिंध हैदराबाद, जो अब पाकिस्तान में है, के एक जौहरी को परख कर मानव कल्याणार्थ निमित्त बनाया। उस काल में धर्म पतन की अवस्था की ओर अग्रसर था। लोग अपना सबकुछ शांति और सद्भाव के लिए देने को आतुर थे। ऐसे समय में ही दादा लेखराज को उस परमशक्ति ने निमित्त बनाकर ब्रह्मा नाम दिया और कहा कि मैं तुम्हारे द्वारा सृष्टि परिवर्तन का काम करूंगा जिन्हें ग्रन्थों में आदि देव, कहीं आदम, ऐडम आदि नाम दिये गये हैं।

अद्वितीय छवि

निराकार, ज्ञान के सागर, सर्वशक्तिवान परमपिता ने जिस आदि देव को अपना रथ बनाया वह अद्भुत, अनुपम व अद्वितीय था। अगर उनकी महिमा की जाए तो उसके लिए शब्द भी कम पड़ जाएंगे। हम सभी प्यार से उन्हें ब्रह्मा बाबा भी कहते हैं। जिन्होंने अपनी सहज तपस्या और त्याग के बल से कर्मातीत अवस्था को प्राप्त किया। उनकी प्रमुख विशेषताओं में से एक यह है कि ब्रह्मा बाबा सदैव अपने आप में निश्चय रखते थे और साथ ही अपने सभी कार्यों को परमात्मा के निमित्त करते थे। किसी भी परिस्थिति में सदा समर्थ संकल्प में रहते थे, उनको हमेशा रहता कि हमारा पिता हमारा रक्षक है, इसलिए हमारा बाल भी बांका नहीं हो सकता। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण कर्मेन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली थी, अपना सम्पूर्ण जीवन देने के पश्चात् भी उन्हें इस बात का बिल्कुल अभिमान नहीं था कि मैंने कुछ त्याग किया। अपनी शक्तिशाली वृत्ति से उन्होंने वायुमण्डल को अति शक्तिशाली बना दिया जिसका आधार परस्पर एक दूसरे को आत्मा देखने के साथ जोड़ा। ब्रह्माबाबा ने मातृशक्ति को सबसे ऊपर रखा, अगर हम यूं कहें कि नारी सशक्तिकरण की शुरुआत उन्होंने की तो ये कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। ब्रह्माबाबा किसी को उठाने के लिए सदा कहा करते कि आपके अंदर ये विशेषता है और ये भी विशेषता है, अगर एक विशेषता और जुड़ जाये तो कितना अच्छा होगा। ऐसे थे हमारे देवभूमि के प्रथम देवदूत।

मानवता के विधान को रचने वाले विश्व रचयिता भाग्य विधाता ने दादा लेखराज को कालचक्र में आने वाले परिवर्तन का वह भयावह परिदृश्य दिखाया जिसको देखकर दादा लेखराज के रोमांच खड़े हो गए। क्या इस दुनिया का इस तरह परिवर्तन होगा? जलजला, प्रकृति का प्रकोप इतना भयानक था कि उस दृश्य का वर्णन करना बहुत मुश्किल है। लेकिन उसके दूसरे ही सीन में परमात्मा ने इनको दिखाया कि ऊपर से आत्मायें उतरती हैं और नीचे आकर देवता बन जाती हैं। तो एक तरफ सृष्टि के महापरिवर्तन का सीन और दूसरी तरफ स्वर्ग का दृश्य। इस साक्षात्कार को कराकर परमात्मा ने यह सिद्ध किया कि पुरानी दुनिया का परिवर्तन और नई दुनिया की स्थापना अब होनी है आपके द्वारा।

साक्षी होना ही सहज योग

सहज का अर्थ होता है, जो तुम्हें सहज लगे, जो तुम्हारे स्वभाव में हो, जो तुम्हें दूसरों से नहीं सीखना है, जो तुम स्वयं हो, जिसका अन्वेषण भीतर ही करना है। उतरते जाओ, उन परतों को हटाते जाओ जो तुम्हारे ज्ञान के चक्षु को ढ़के हुए हैं। जब तक तुम स्वयं, स्वयं के साक्षी न बन जाओ तब तक सहज योग की तरफ बढ़ना मुश्किल है।

आपके भीतर दो चीज़ें घट रही हैं। एक तो साक्षी है, जो सिर्फ देखता है, सिर्फ दृष्टा है; दृष्टा से भिन्न कभी कुछ भी नहीं है और दूसरी तुम्हारी देह है, तुम्हारा मन है, तुम्हारा संस्कार है, तुम्हारे विचार हैं। ये सब तुम्हारे साक्षी के सामने से गुज़रते हैं। लेकिन तुम इन्हें सिर्फ देखते नहीं, इनके साथ अपना राग-रंग बना लेते हो, इनके साथ आसक्ति निर्मित कर लेते हो। एक ऐसा बादल जो तुम्हारे चित्त पर से गुज़रता है और जो तुम्हारे मंसा को ढ़क लेता है, वो बादल हैं तुम्हारे पुराने संस्कार। इन्हीं पुराने संस्कारों की वजह से लोग हमें वैसा ही देखते हैं जैसे वे खुद हैं। लेकिन अगर तुम बदलने की बात कहोगे तो लोग तुम्हें पागल समझेंगे।असल में बदलना ही अपने आप में एक पागलपन है! जैसे एक पागल को इस दुनिया में सभी लोग एक जैसे ही नज़र आते हैं, वैसे ही तुम्हें बनना है। तो जानने वालों की नज़रों में तुम पागल ही बन जाओ ना। एक क्षण पहले तो तुम मुस्करा रहे थे, बड़े आनंदित थे। फिर पड़ोसी ने कुछ कह दिया। दो शब्दों की भनकार - और तुम्हारे भीतर एक उदास बदली घिर गई! या किसी ने तुम्हें ऐसी नज़र से देख लिया था जो तुम्हें भाया नहीं। या तो जो आदमी तुम्हें रोज़ नमस्कार करता था उसने आज तुम्हें नमस्कार नहीं किया। तुम्हारे चित्त पर एक छाया पड़ गई - एक उदास बदली घिर गई। अभी-अभी सूरज उगा था, अभी-अभी धूप थी, अब अंधेरा हो गया। अब तुम बोले कि मैं उदास हूँ।

- ब्र. कु. गंगाधर

आप यह उदास बदली नहीं हो, आप तो धूप ही हो। क्योंकि बदली धूप को तो ढ़कती है ना, तो आप हमेशा से खुले ही थे, लेकिन आज अज्ञान अंधकार रूपी बदली ने आपको ढ़का हुआ है। मैं प्रसन्न हूँ, मैं आनंद ही हूँ। जैसे-जैसे घड़ियां आपकी आगे बढ़ेंगी वैसे-वैसे आपका प्रेम बढ़ता जायेगा।

और चौबीस घण्टे तुम्हारे चित्त की राह पर बहुत सी चीज़ें गुज़रती हैं। यह तो बड़ा आवागमन है चित्त का! यह तो राह है जो चलती ही रहती है, दिन-रात चलती रहती है। इसमें हरेक यात्री के साथ जुड़ जाते हो और तुम्हें याद भी नहीं आता कि तुम सबसे भिन्न हो। दु:ख और सुख आते हैं, चले जाते हैं। तुम न आते हो न जाते हो। न तुम्हारा आना है न जाना है। सुख-दु:ख मेहमान बनते हैं क्षण भर को, टिक जाते हैं तुम्हारे भीतर थोड़ी देर को, फिर विदा हो जाते हैं। तुम मालिक हो। तुम आतिथेय हो, ये तो सब अतिथि हैं - आते-जाते रहते हैं। आप इनमें से कभी किसी के साथ अपने को एक न करो। एक किया, तादात्म्य किया, भ्रान्ति हो गई।

बस चित्त की भावदशाओं के साथ तादात्म्य हो जाना ही संसार है, और चित्त की भावदशाओं के साथ तादात्म्य का टूट जाना, साक्षी का जन्म है। वही सहजयोगी है।

आप सिर्फ देखो। दु:ख आये तो देखो - और जानते रहो कि मैं देखने वाला हूँ। मैं दु:ख नहीं हूँ, और आप बहुत चौंकोगे। इस छोटे से प्रयोग को उतारो जीवन में। यह कुंजी है। इससे अमृत के द्वार खुल जाते हैं। दु:ख आये, देखते रहो। जागे रहना; क्योंकि पुरानी आदत हो गई है। जन्मों-जन्मों की आदत हो गई है जल्दी से दु:खी हो जाने की। कहना कि मैं देखने वाला हूँ। कि मैं तो सिर्फ दर्पण हूँ, कि दु:ख की छाया बन रही है ठीक। इससे दर्पण दु:खी नहीं होता। छाया गई, दर्पण फिर खाली हो जाता है। आप दर्पण मात्र, दृष्टा मात्र, साक्षी मात्र।

फिर खुशी भी आयेगी, अब खुश मत हो जाना क्योंकि दु:ख को तो देखने की आदमी चेष्टा कर लेता है, क्योंकि दु:खी तो कोई होना नहीं चाहता; लेकिन सुख...सुख को तो जल्दी से

- शेष पेज 8 पर

नियम ,मर्यादा व सभ्यता के कायदे में फायदा

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

सारे मनुष्य सृष्टि में कुदरत के नियम अनुसार मनुष्य आत्मा को बाबा देवता बनाता है। वहाँ कोई कमी नहीं होगी। हम यहाँ मेहनत करके देवता तो क्या फरिश्ता बन रहे हैं। धरती पर पाँव न हों, उड़ती कला हो इसलिए सब जहाँ तहाँ प्लेन चल या उड़ रहा है, बहुत शान्त... तो प्रकृति भी दिखाती है, मैं कैसे समय पर साथ देती हूँ। हाँ, कायदा है सीट बेल्ट बांधने का। एक बारी स्पीड पकड़ ली तो बेफिक्र होकर सो जाओ। फिर बताते हैं कितना टाइम लगेगा उतरने में, फिर भी अगर कोई कहे नहीं, यहीं कम्फरटेबल है, आराम से बैठे हैं, तो आराम से बैठ जायेंगे क्या? तो यहाँ कभी-कभी कम्फरटेबल मिलता है, तो उस ज़ोन में रहने वाले नहीं बनो, यहाँ सब बहुत अच्छा है, इसलिए मैं यहीं रहूंगी, फाइनल कर दिया। लेकिन यह नहीं चलेगा, किसकी नेचर है, जब तक वह चीज़ मिलेगी नहीं तब तक नींद नहीं आयेगी। वास्तव में सच्चाई और प्रेम से कहीं कोई दिक्कत नहीं आती है। जो बाबा ने नियम-कायदा बना के दिया है उस पर एक्यूरेट रहें। मेरे को यही नहीं चलता है, मेरे को ऐसे करना है... तो बाबा बंधायमान नहीं है उसको सम्भालने के लिए। जो बाबा ने कायदा बना के दिया है, वह अच्छे लगते हैं उसमें कम्फरटेबल हैं। नियम पर चलना बहुत सुखदाई है। नियम, मर्यादा, सभ्यता... बातचीत करने की सभ्यता ऐसी हो, मान मांगने से नहीं मिलता है, माननीय बनने से मान ऑटोमेटिक मिलता है।

जैसे दादी का, बाबा का, मम्मा का फोटो सभी ने लगाया है, ऐसे सभी पूर्वजों का भी फोटो हो... बाबा मम्मा ने इन्हों को ऐसा कैसे बनाया? बाबा ने जो सेवा के बंधन में बांधा है तो सूक्ष्म मन वाणी कर्म से स्नेह भरे वायब्रेशन से अच्छे अनुभव होते हैं। निश्चय की भी शक्ति है, गैरंटी है दुनिया में कुछ भी हो जायेगा हमको कुछ नहीं होगा। और कुछ कहने की बात ही नहीं है, विनाश कब होगा? यह पूछने की क्या बात है! तुम तैयार तो हो जाओ। विनाश के पहले नई दुनिया की स्थापना हो जाये, तुम्हारी फरिश्तों जैसी स्थिति बन जाये। बहुतकाल से निर्वैर, निर्भय स्थिति हो तो विनाश के समय मिरुआ मौत मलूकों के लिए शिकार... ऐसी स्थिति अभी-अभी बनानी है। विनाश के पहले हम तैयार बैठे हैं, ऐसे ऊपर रहते हैं ना, तो कोई भी बात हमारे तक पहुँचेगी नहीं। पाँच तत्वों की हम रक्षा कर रहे हैं, उसको सतोप्रधान बना रहे हैं, तो प्रकृति का कोई भी प्रकोप हमारे नज़दीक भी नहीं आयेगा। तो हमारे लिए सब अच्छा होगा। मेरी सरेण्डर लाइफ है, तो अशरीरी, देह यहाँ, मैं वहाँ...। मैं आत्मा बाप के घर से आयी हूँ, अभी ब्रह्मा मुख वंशावली हूँ, यह अभ्यास करो।

प्रश्न: हम यूथ आप जैसी 14 वर्ष तपस्या कर सकते हैं?

उत्तर: क्यों नहीं, एक बाबा दूसरा न कोई, यह पाठ पक्का कर लो। अशरीरी भव का अनुभव ऐसे हो जो कन्टीन्यू फोर्स वाला पुरुषार्थ चलता रहे। पुरुषार्थ में आलस्य-अलबेलापन न रहे। दृष्टि-वृत्ति की एक्टीविटी को एक्यूरेट करना माना पक्का बन जाना - यही तो भट्ठी करना है। जैसे भट्ठी में वो इंटें पक्की हो जाती हैं तभी उसे दीवारों में यूज़ करते हैं। भट्ठी में कोई कच्ची ईट रह जाती है तो फेंक देते हैं। तो अभी ऐसी भट्ठी करो जो पक्के रहो, अभी तो ऐसी भट्ठी हर एक कर सकता है। कभी न कभी कोई ने ऐसा अच्छा पुरुषार्थ किया है जो फलस्वरूप आज स्व सहित सर्व के काम में आ रहा है।

प्रश्न: आप बाबा से किस तरह से चिटचैट करती हैं?

उत्तर: जब कम्पैनियन दोनों मैच्युअर होते हैं ना, तो बात कम करते हैं पर दोनों के मंगल मिलन से हर एक को लाइट माइट का अनुभव होता है, तो यह एक शक्ति है आज्ञाकारी बनने की। जो बहुतकाल से आज्ञाकारी ओबिडियेंट हैं, वफादार हैं माना सिवाए बाबा के और कोई याद आता ही नहीं है। ईमानदारी यानि थोड़ा भी निष्फल नहीं हुए हैं। क्या करें... मजबूरी जब भी आती है माना बाबा से सम्बन्ध नहीं है। बाबा के हर बोल के लिए कदर है, उसी प्रमाण अपनी जीवन यात्रा सफल की है। तन-मन-धन मेरा नहीं है, थोड़ा भी जो मेरा कहाँ भी है, तो अंदर वो खींचता है। सम्बन्ध में मेरापन है, तन में मेरापन है, कहीं पर भी मेरापन है तो उसको समर्पण कैसे कहेंगे? कुछ मेरा नहीं माना समर्पण। तो बाबा ऐसे बच्चे को छत्रछाया के नीचे ऐसे रखता है जैसे गोदी में लेके गले का हार बनाया, अभी सेवा में छत्रछाया है। कोई और संकल्प कुछ है ही नहीं।

खुशी होती है तो कर्म एक खेल लगता है

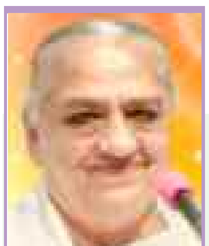
दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

जब हम परमात्म मिलन, परमात्म प्यार का अनुभव करना चाहते हैं तो हमें देह भाव की स्मृति को भूलना पड़ता है और अपने वास्तविक आत्मिक स्वरूप में अशरीरी स्थिति में स्थित होना पड़ता है। और जब हम अपने आत्मा रूप में स्थित हो जाते हैं तो आत्मा का सिवाय परमात्मा के और कौन है? आत्मा का रिलेशन, कनेक्शन सब एक परमात्मा से है। तो जब हम परमात्म प्यार का अनुभव करना चाहते हैं, तो यही छोटी सी विधि अपनानी होगी कि मैं आत्मा बच्चा परमात्मा से मिलन मना रहा हूँ। और वो परमात्म प्यार, परमात्म अनुभूति व मिलन इतना अलौकिक है, इतना प्यारा है, जो आपकी दिल ही नहीं होगी उस परमात्म प्यार को छोड़ने की। चाहे आप बॉडी कॉन्सेस में आकर कर्म भी करेंगे तो भी आपका मन बुद्धि परमात्म प्यार की अनुभूति को भूलेगा नहीं। उस प्यार की प्राप्ति से आप जो भी कर्म करेंगे तो उसमें खुशी बहुत होगी। और जहां खुशी होती है वहां कर्म कैसे होता है? यह तो आपको अनुभव होगा कि जब मन में किसी भी प्रकार की खुशी होती है तो खुशी में हाथ-पांव बहुत जल्दी-जल्दी और अच्छे चलेंगे, उसमें थकावट नहीं होगी। खुशी ऐसी खुराक है जिसमें थकावट भूल जाती है। और अगर प्राप्ति नहीं है, तो खुशी भी नहीं होगी। और खुशी नहीं है तो जो काम करेंगे वह मजबूरी से, बोझ से करेंगे। लेकिन जब खुशी होती है तो कर्म, कर्म नहीं लगता, बोझ नहीं लगता, एक खेल लगता है। खुशी एक ऐसी खुराक है जो मनुष्य को कमज़ोर से शक्तिशाली बना देती है। तो आत्मिक शक्ति व आत्मिक खुशी से जो प्राप्ति होती है वह मुश्किल को सहज कर देती है, भारी चीज़ को एकदम हल्का कर देती है। जैसे कुछ हुआ ही नहीं, किया ही नहीं। तो ये परमात्म प्यार, अविनाशी प्यार, आत्मिक प्यार और ये अविनाशी खुशी- ये चीज़ें हम लोगों ने अपने प्यारे से प्यारे परमात्मा पिता से प्राप्त की। और हम तो ऐसे ही समझते हैं कि सचमुच जीवन है तो खुशी है। हमको शिवबाबा ने स्लोगन भी दिया था कि प्राण चला जाए लेकिन खुशी नहीं जाए। क्योंकि खुशी-खुशी में प्राण चले जाएंगे तो गैरन्टी है आपका जन्म अच्छा होगा। लेकिन अगर जीवन है और खुशी चली जाए तो वह जीवन, जीवन नहीं होती। वह न जीये हुए हैं, न मरे हुए हैं। बीच का जीवन होता है। इसीलिए बापदादा ने जो आप सबको अविनाशी खुशी की गिफ्ट दी है। इस खुशी को बढ़ाना चाहते हो तो इसकी विधि ये है कि जितना आप बांटेंगे उतनी बढ़ेगी। और कोई भी चीज़ बांटने से कम होती है लेकिन यह खुशी अविनाशी खुशी ऐसी चीज़ है जो बांटने से बढ़ती है।

जो अनुभूतियां और शक्तियां प्राप्त की हैं उसको कायम रखने के लिए आगे बढ़ाने के लिए आप एक बात ध्यान में रखना कि इस ईश्वरीय परिवार के कनेक्शन और रिलेशन में सदा रहना है। अगर यह संग करते रहेंगे तो आपके ऊपर ये ईश्वरीय रंग, खुशी का रंग, प्यार का रंग, ऐसा पक्का लगता जायेगा जो आप मिटाना चाहो तो भी नहीं मिट सकेंगे। क्योंकि कहा जाता है - जैसा संग वैसा रंग। एक बार की यह अनुभूति जीवन भर के लिए एक आधार हो जाती है। और सब स्थूल चीज़ें रह जायेंगी, लेकिन ये अविनाशी प्यार, अवनाशी खुशी जो है, ये ऐसे खज़ाने हैं जो आत्मा साथ में ले जायेंगी, संस्कार भरकर जायेंगी। आजकल दो चीज़ें ही जीवन में बहुत आवश्यक हैं - एक प्यार और दूसरा खुशी। प्यार से दो शब्द भी किसको बोल दो तो वो दो शब्द भी उसे कितनी हिम्मत दिलाते हैं जिससे उसके जीवन में एक नया उमंग-उत्साह उत्पन्न हो जाता है।

दादी प्रकाशमणि की नज़रों में बाबा

दुनिया में कितना दु:ख-दर्द है, लड़ाइयां है, हिंसा है, पापाचार है तो लगता जैसे बाबा को बच्चों का दु:ख सहन नहीं होता। यह सब देख बाबा कहते - बस, इस पुरानी दुनिया को तो करो परिवर्तन। अब जल्दी इसका विनाश हो तो नई दुनिया आये जहां सब मेरे बच्चे सद्गति को प्राप्त करें, इस विश्व का नव निर्माण हो, यह दुनिया स्वर्ग बन जाये। सब धर्म वाले वापस अपने घर चलें। सबको मुक्ति मिले। बच्चों को जीवनमुक्ति मिले। सबको बाप का परिचय मिले। बाप से सबका संबंध जुटे। यह थी मंसा हमारे बाबा की।

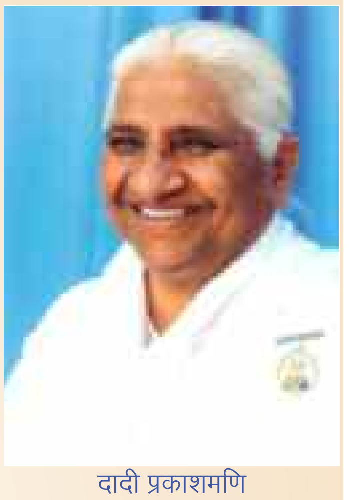

दादी प्रकाशमणि

निराकार को कहते हैं कि वह आनंद का सागर है लेकिन हमने ब्रह्मा बाबा को सदा आनंद के अथाह सागर में लहराता हुआ देखा। इतना बाबा आनंद में रहता था जैसे विष्णु को क्षीर सागर में बड़े आनंद से लेटा हुआ दिखाते हैं। कोई चिंता नहीं। इतने बच्चे होते भी मैं अकेला हूँ। बाबा सदा ऐसे रहता जैसे बेगमपुर का बेफिक्र बादशाह है।

- विश्व कल्याण के लिए सब धर्म की, सारे विश्व की आत्मायें बाबा के सामने होती थी। सब बाप से वर्सा लें, कोई भी वंचित न रहे, सभी बच्चे अंधकार से निकल रोशनी में आ जायें, इतना बाबा को बच्चों के लिए ओना रहता था।

- शिव बाबा को विघ्न विनाशक कहते हैं और मैंने साकार में बाबा को सदा विघ्न-जीत पाया। कोई भी प्रकार का कैसा भी विघ्न आया, बाबा कहेगा - बच्ची, कोई बड़ी बात नहीं, नथिंग न्यु। यह भी ड्रामा। बाबा एक सेकण्ड में बिंदु लगा देता। बाबा के मस्तक पर कभी रिंचक मात्र भी फिकरात का चिह्न नहीं देखा। पानी पर लकीर की तरह आया और चला गया। कोई भी विघ्न आये, चाहे बांधेले रहे, वारंट निकले, चाहे समाज बिगड़ा, सरकार बिगड़ी, लौकिक संबंधी बिगड़े, अलौकिक ने विघ्न डाले - कुछ भी हुआ लेकिन बाबा को एकदम ऊंची चोटी पर देखा।

- बाबा साधारण से साधारण कर्म करते भी सदा ऊंचे नशे में रहते थे। बाबा को मैंने कभी नीचे आया हुआ नहीं देखा। खाना-पीना, घूमना-फिरना बच्चों को पत्र लिखाना, डायरेक्शन देना - सब कुछ करते सदा देखो तो ऊंचे ते ऊंचा बाबा अपनी ऊंची स्थिति में है। हम बाबा को अनेकानेक बार देखती थी जैसे ज़मीन से आसमान तक बाबा ही हो जिसका मैं माप नहीं कर सकती। बाबा के मस्तक पर सदैव लाइट का ग्लोब जैसे चमकता था। ऐसे अनुभव होता जैसे बहुत शीतल मीठा सवेरे के सूरज की तरह चमक रहा हो और बाबा के मस्तक से चंद्र की चमकती हुई शीतल किरणें निकल रही हों।

- बाबा सदा परोपकारी थे। कितना भी कोई अपकार करे लेकिन बाबा सदैव मीठी दृष्टि से अपकारी पर भी उपकार करते। बाबा की नज़र में कभी अपकार की या बदला लेने की भावना उत्पन्न ही नहीं होती। बाबा ने दुश्मन को भी मित्र समझा। निंदा करने वाले को भी मित्र समझकर गले लगाया। कभी कोई बाबा के पांव में झुकता तो बाबा को जैसे सहन नहीं होता। बाबा कहते - तुम बच्चे तो मेरे गले की माला हो, मैं तुम बच्चों को गले लगाता हूँ, तुम पांव क्यों पड़ते हो?

- बाबा सत्यता का अवतार था। निराकार भगवान को कहते `सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' लेकिन हमने तो ब्रह्मा बाबा को सदा सत्यता की अथॉरिटी देखा। बाबा हमेशा कहते - बच्चे, जहां सत्यता है वहां जीत है। सच तो बिठो नच। बाबा बच्चों को शिक्षा देते - बच्चे बाप से कुछ भी छिपाओ नहीं। सदा सच्चे रहो। कभी बाबा के मुख से हेर-फेर युक्ति, झूठ शब्द नहीं सुने। बाबा को सदा निर्भय, निर्वैर, निरहंकारी, निर्विकारी, निराकारी देखा।

- हमने तो बाबा को प्रैक्टिकल में मर्यादा पुरुषोत्तम देखा। तुम समाज में रहते उनसे पूरा निभाओ। अगर कोई गाली भी दे तो तुम उन पर फूल चढ़ाओ, इतना एक-दूसरे को सम्मान दो। छोटे बच्चों को भी बाबा स्वयं इतना सम्मान देते थे। बाबा कहते - यह छोटे बच्चे तो सुभान अल्लाह हैं। बच्चे तो महात्मा होते हैं।

इस तरह से हर कदम में हर प्रकार से बाबा ने हम बच्चों की वरदानों से पालना की। वरदानों से ही पाला। तो हमारा अनुभव कहता है कि हमने तो साकर में भगवान को पाया। निराकार तो शिव बाबा है, ब्रह्मा बाबा साकार है। लेकिन साकार में हमने सब कुछ पाया। तो ऐसे मीठे बाबा को पूरा फॉलो कर हमें भी उनके समान बनना है। लौकिक में रहते सब कुछ निभाते ऐसा दिव्य फरिश्ता बनना है। बाबा के समान अपना तन, मन, धन सब सफल करके भविष्य 21 जन्मों के लिए श्रेष्ठ भाग्य बनाना है। बाबा समान सदा अथक बन दधीचि ऋषि की तरह यज्ञ की प्यार से हड्डी सेवा करनी है। सदा हर्षित और प्रसन्नचित्त रहना है।

समेटने की शक्ति का ज़बरदस्त उदाहरण

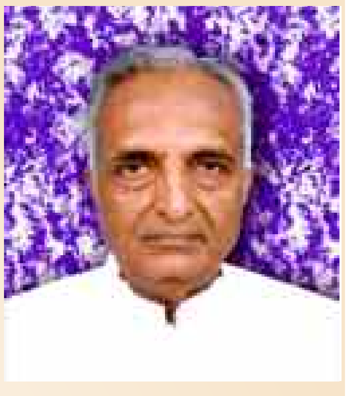

-ब्र.कु. रमेश शाह,अतिरिक्त सचिव,ब्रह्माकुमारीज़

एक बात मैंने पिताश्री जी से सीखी। शिव बाबा ने योग के द्वारा जो आठ शक्तियां प्रदान की हैं उसमें समेटने की शक्ति एक शक्ति है। समेटने की शक्ति दुनिया के हर एक व्यक्ति को अपने व्यावहारिक और आध्यात्मिक जीवन में अपनानी पड़ती है। जैसे लौकिक दुनिया में हर एक व्यक्ति को शरीर तो छोड़ना ही है परन्तु उसके पहले अपने कारोबार को समेटना ज़रूरी है। कानूनी दृष्टिकोण से समेटने की बात कैसे प्रश्न उत्पन्न कर सकती है उसके मैंने कई उदाहरण अपने व्यावसायिक जीवन में देखे हैं। चाहते हुए भी एक व्यक्ति, देह छोड़ने के पूर्व, अपना कारोबार संपूर्ण रूप से समेट नहीं सकता। चाहे वह व्यक्ति एक छोटे से परिवार का कर्ता-धर्ता हो या कोई छोटे-बड़े व्यापार का मालिक हो या कोई छोटे-बड़े मंदिर अथवा आश्रम का मुखिया हो। परन्तु सभी जगह पर समेटने की शक्ति का यथार्थ उपयोग न होने के कारण व्यक्ति अपने पीछे अनेक प्रकार की समस्याएं औरों के लिए छोड़ जाता है। और इसीलिए देखा गया है कि कई बड़े-बड़े घरों में इसी के कारण कई समस्याएं खड़ी हो जाती हैं।

परन्तु ब्रह्मा बाबा के व्यक्तिगत जीवन में मैंने देखा कि बाबा ने अपने व्यक्तिगत जीवन की हर एक बात इतनी सुन्दर रीति से समेटी हुई थी कि उनके पश्चात् किसी को, कोई भी प्रकार की समस्या उत्पन्न नहीं हुई। इसी तरह से इतने बड़े ईश्वरीय विश्व विद्यालय का भविष्य में संचालन कैसे हो, उसके बारे में हर प्रकार का स्थूल एवम् सूक्ष्म मार्ग-दर्शन बाबा ने दिया था। जिस कारण बाद में उस रास्ते पर चलने वाले अनुयायियों को कोई समस्या नहीं आई, इतना ही नहीं बल्कि कोई कानूनी, आर्थिक, व्यावहारिक व आध्यात्मिक प्रश्न उत्पन्न नहीं हुए। यह एक समेटने की शक्ति का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण साकार बाबा के जीवन से हमें मिलता है।

हमें भी यह देह, देह के सम्बन्ध, व्यवहार तथा कारोबार छोड़ना ही है। अत: क्यों नहीं हम ऐसा अपना कारोबार समेट लें कि पीछे हम अन्य किसी के लिए समस्या न बनें तथा और कोई हिसाब न रह जाए जिसको चुक्तू करने के लिए नया जन्म लेना पड़े या धर्मराजपुरी में जाकर सज़ा खानी पड़े। जिस तरह से ब्रह्मा बाबा ने अपना सारा ही कारोबार समेटा, ऐसे ही हमें भी अपना सभी प्रकार का कारोबार समेटने में पूर्ण रूप से सफलता मिले - यही शिक्षा लेकर सबसे बड़ी श्रद्धांजली हम ब्रह्मा बाबा को दे सकेंगे।

अजमेर-चोर्सियावास रोड। राजस्थान की मुख्यमंत्री माननीय वसुंधरा राजे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रूपा व ब्र.कु. ज्योति।

पालम विहार-गुड़गांव। नॉर्थ कैम्पस यूनिवर्सिटी में यूनिवर्सिटी के टीचर्स व स्टूडेंट्स के लिए 'गुड न्यूज़, यू आर नॉट योर ब्रेन' विषय पर टॉक शो के पश्चात् समूह चित्र में नेविल हॉडकिन्सन,अवॉर्ड विनिंग जर्नलिस्ट,सेवरल न्यूज़पेपर,यू.के., प्रो. प्रेम व्रत, ब्र.कु. उर्मिल, दिलीप श्रीवास्तव,रिटायर्ड प्रिन्सीपल साइंटिस्ट डी.आर.डी.ओ. व कॉलम राइटर,टाइम्स ऑफ इंडिया, डॉ. महिमा व अन्य।

दिल्ली-समयपुर। सेवाकेन्द्र के रजत जयंती समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए विधायक अजेश यादव, ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. राजकुमारी व ब्र.कु. भाई बहनें।

मिट्ठापुर-पंजाब। भारतीय जीवन बीमा शाखा-2 के सीनियर ब्रान्च मैनेजर एस.एस. भलही को ईश्वरीय संदेश देने के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मीरा।

भिवंडी-महा.। स्पार्क मीटिंग में दीप प्रज्वलन के बाद ईश्वरीय स्मृति में नयुक्लियर वैज्ञानिक के.पी.मिश्रा, मुम्बई युनिवर्सिटी एवं मुख्य स्पार्क मेम्बर्स व ब्र.कु.कुन्ति।

मंसा-पंजाब। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित हैं एस.डी.एम. राकेश कुमार गर्ग, ब्र.कु. सुदेश बहन, ब्र.कु. हरिन्दर बहन व अन्य।

चाहे जितना समय लगे हमें सकारात्मक उर्जा ही प्रवाहित करनी है

गतांक से आगे...

प्रश्नः- एक बात है जो बहुत लोग सोचते हैं कि जैसे ही मैं इनको सम्मान देता हूँ तो इनका सर चढ़ जाता है। मैं जानती हूँ कि ये गलत है लेकिन फिर भी ये बात कही जाती है चाहे वो घर पर हो, चाहे वो बाहर हो, और हमारा अनादर करना शुरू कर देते हैं। बाद में यही कहेंगे कि मैंने इनको ज़रा सी छूट क्या दी ये तो मेरे ही सिर पर चढ़कर बैठ गये।

उत्तरः- चलो, उनके बारे में बात नहीं करते हैं अपने बारे में सोचते हैं। क्योंकि अगर मैं सीनियर हूँ तो मेरे से ऊपर कोई और सीनियर है, नहीं भी है तो मैं इसे मान लेती हूँ। अगर मुझसे कोई सीनियर हो तो मुझे क्या अच्छा लगेगा कि वो मुझसे कैसे काम करवायें, वो मुझसे कैसे बात करें? अच्छा, मैं सीनियर हूँ तो मैं कभी बच्चा तो था ना! जब मैं बच्चा था तो मैं क्या चाहता था कि मेरे पेरेंट्स मुझसे कैसे बात करें, क्या मेरा व्यक्तित्व ये था कि अगर मेरे पेरेंट्स मुझसे प्यार से बात करते तो मैं उसका गलत फायदा उठा लेता, कभी नहीं।

प्रश्नः- भल मैं तो अच्छा था।

उत्तरः- सारे अच्छे होते हैं, सारे ही वैसा करते हैं। हम यह सोचते हैं कि हम ऐसा करते लेकिन वास्तव में सारे ही ऐसे हैं। हर कोई प्यार चाहता है, हर कोई सहयोग चाहता है, हर कोई कम्पैशन चाहता है, कोई मिला आपको जो यह कहे कि मेरी अलोचना करो तो मैं ज़्यादा अच्छा से काम करुंगा। लेकिन कई बार ऐसा होता है कि समय से ज़्यादा काम करवाने की, डांट कर काम करवाने की, इसी तरह सामने वाले को भी आदत पड़ी है डांट खाने की, तो डांट तो पड़ेगी ही। हम दोनों के संस्कार थोड़े ऐसे वाले हुए हैं, लेकिन आप एक बार प्रयास करके देखो कि डांट से नहीं, प्यार से ही काम कराना है। भले वो थोड़ा देर से काम करें हो सकता है कि एक दिन, दो दिन, एक महीना, दो महीना, चार महीना लग जाये काम करवाने के ढंग में परिवर्तन आने में लेकिन परिवर्तन ज़रूर आयेगा। और अब जो काम होगा उसे लोग बहुत प्यार से करेंगे और आपस में नज़दीक आ जायेंगे, क्योंकि उनके बीच पॉज़ीटिव एनर्जी का प्रवाह हो रहा है। आप किसी की आलोचना करो, फिर वो आपसे नफरत करे तो इस तरह से बॉस और जूनियर के बीच में पॉज़ीटिव एनर्जी प्रवाहित नहीं होती है। लेकिन जहां प्यार, सहयोग और स्वीकृति की एनर्जी प्रवाहित होती है तो इसे हर कोई पसंद करता है। और फिर हमें कोई कहेगा नहीं कि आप काम करो, हमारा मन खुद ही काम करने का करेगा, इनके लिए, इनकी कम्पनी के लिए क्योंकि इनकी कम्पनी अब हमें अपनी लगने लगती है।

ब्र. कु. शिवानी

आज कॉर्पोरेट सेक्टर में आप अपना दिमाग तो लेकर आ रहे हैं ऑफिस में लेकिन अपना दिल घर पर छोड़कर आते हैं। तो क्या आप काम को रुचि से करेंगे? फिर आपको काम करवाने के लिए बोलना नहीं पड़ेगा, काम होता जायेगा। इतनी पारदर्शिता आ जायेगी आपस में, किसी से कोई गलती नहीं होगी और होगी भी तो वो खुद आकर सच बतायेंगे। क्योंकि उनको पता है कि आप डांटने वाले नहीं हैं। इससे एक-दूसरे के बीच विश्वास की भावना पैदा होती है।

प्रश्नः- इससे गलतियां भी कम होंगी, क्योंकि डर नहीं होगा।

उत्तरः- डर के कारण एक विशेष सर्कल बनता है, गलती हो जाती है, फिर डर के कारण गलती को छिपाते हैं, फिर छिपाकर उसका दोष किसी और पर डाल देते हैं। अगर बॉस ने मुझे पकड़ लिया कि मुझसे गलती हुई है तो मैं तुरंत बोलूंगी कि यह मेरी वजह से नहीं उनकी वजह से हुई है। अब जैसे ही हमने दूसरे को दोषी ठहराया तो हमारा और उनका संबंध तो बिगड़ गया। और सारी एनर्जी निगेटिव हो जाती है और अगर परदर्शिता है तो मैं विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि मुझसे गलती हो गई और यह उसी समय समाप्त भी हो जाता है।

कहीं पर भी मेरा ये उद्देश्य नहीं था, तो वो आत्मविश्वास रहेगा मुझे कि हाँ ठीक है। आज बच्चों से बात शुरू करते हैं, स्ट्रेस को हमने देखा कि जब जितनी मेरी आंतरिक स्थिरता, आंतरिक प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती जा रही थी, वो जो स्ट्रेस था और भी कम होता जा रहा था। हमने कहा कि जितना स्ट्रेस होगा उतनी मेरी परफॉरमेंस बढ़ेगी। तो यहां ये समझ में आया है कि स्ट्रेस जो था वो मेरी परफॉरमेंस नहीं था, यह मुझे और भी कमज़ोर कर रहा था। उसके लिए मुझे स्ट्रेस को नज़रअंदाज़ करना होगा।

गुड़ खाने से अठारह फायदे... // आपका स्वास्थ्य

1. खाना खाने के बाद अक्सर मीठा खाने का मन करता है। इसके लिए सबसे बेहतर है कि आप गुड़ खाएं। गुड़ का सेवन करने से आप हेल्दी रह सकते हैं।

2. गुड़ खाने से गैस की दिक्कत नहीं होती है।

3. पाचन क्रिया को सही रखता है।

4. गुड़ शरीर का रक्त साफ करता है और मेटाबॉल्ज़िम ठीक करता है। रोज़ एक गिलास पानी या दूध के साथ गुड़ का सेवन पेट को ठंडक देता है। जिन लोगों को गैस की परेशानी है, वो रोज़ लंच या डिनर के बाद थोड़ा गुड़ ज़रूर खाएं।

5. गुड़ आयरन का मुख्य स्रोत है। इसलिए यह एनीमिया के मरीज़ों के लिए बहुत फायदेमंद है। खासतौर पर महिलाओं के लिए इसका सेवन बहुत अधिक ज़रूरी है।

6. त्वचा के लिए - गुड़ ब्लड से खराब टॉक्सिन दूर करता है, जिससे त्वचा दमकती है और मुहाँसे की समस्या नहीं होती है।

7. गुड़ की तासीर गर्म है, इसलिए इसका सेवन जुकाम और कफ से आराम दिलाता है। जुकाम के दौरान अगर आप कच्चा गुड़ नहीं खाना चाहते हैं तो चाय या लड्डू में भी इसका इस्तेमाल कर सकते हैं।

8. एनर्जी के लिए - बुहत ज़्यादा थकान और कमज़ोरी महसूस करने पर गुड़ का सेवन करने से आपका एनर्जी लेवल बढ़ जाता है। गुड़ जल्दी पच जाता है, इससे शुगर का स्तर भी नहीं बढ़ता। दिनभर काम करने के बाद जब भी आपको थकान हो, तुरंत गुड़ खाएं।

9. गुड़ शरीर के टेंपरेचर को नियंत्रित रखता है। इसमें एंटी एलर्जिक तत्व हैं, इसलिए दमा के मरीज़ों के लिए इसका सेवन काफी फायदेमंद है।

10. जोड़ों के दर्द में आराम - रोज़ गुड़ के एक टुकड़े के साथ अदरक का सेवन करें, इससे जोड़ों के दर्द की दिक्कत नहीं होगी।

11. गुड़ के साथ पके चावल खाने से बैठा हुआ गला व आवाज़ खुल जाती है।

12. गुड़ और काले तिल के लड्डू खाने से सर्दी में अस्थमा की परेशानी नहीं होती है।

13. जुकाम जम गया हो, तो गुड़ पिघलाकर उसकी पपड़ी बनाकर खाएं।

14. गुड़ और घी मिलाकर खाने से कान का दर्द ठीक हो जाता है।

15. भोजन के बाद गुड़ खा लेने से पेट में गैस नहीं बनती।

16. पाँच ग्राम सौंठ दस ग्राम गुड़ के साथ लेने से पीलिया रोग में लाभ होता है।

17. गुड़ का हलवा खाने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

18. पाँच ग्राम गुड़ को इतने ही सरसो के तेल में मिलाकर खाने से श्वास रोग से छुटकारा मिलता है।

बहुत ही सहज है राजयोग...

कभी-कभी आप कम्प्यूटर पर काम करते हैं तो उस समय आप अन्दर से कोई फोल्डर या फाईल पर काम करते हैं ना कि अलग से टाईप करते हैं। ठीक उसी प्रकार हमारे संस्कारों में बहुत सारे पुराने फोल्डर्स वा फाईल्स (पुरानी आदतें, यादें, भूतकाल की बातें, दु:ख देने वाली बातें आदि-आदि) पड़े हुए हैं जो बीच-बीच में मन रूपी पर्दे पर आते रहते हैं। इसलिए आप कभी बहुत खुश होते हैं पुरानी बातें याद करके और कभी बहुत दु:खी होते हैं। जैसे कम्प्यूटर में कोई फोल्डर को सर्च करने के लिए एक संकेत (क्ल्यू) का इस्तेमाल करते हैं। ठीक वैसे ही जब भी हम किसी भी व्यक्ति को देखते हैं जो बीस साल पहले मिला हो उसी समय उससे सम्बन्धित सभी पुरानी बातें याद आ जाती हैं।

गतांक से आगे...

अब क्या करें?

आज क्या हुआ है कि हमारे मन में हमारा कुछ भी नहीं है। जब आप कहते हो मेरा मन, तो इसका अर्थ हुआ कि आप मन नहीं हैं, अब यदि इसे दूसरे शब्दों में कहा जाए कि जब आप मन नहीं हैं तो आपके मन में रहने वाले लोग भी आपके नहीं हैं। आप कहते भी हैं कि मेरे लोग अर्थात् कि मेरा घर, मेरा परिवार, मेरे बच्चे, मेरा पति, मेरा धन, मेरी सम्पत्ति आदि-आदि। मेरे मन में या यूं कहें कि मेरे संस्कारों में वो चित्र-चरित्र या रंगों के रूप में बैठे हुए हैं। बीच-बीच में यही तो मेरे मन में आ रहे हैं। चूंकि आज बुद्धि काम नहीं कर रही है। इसलिए हमारे मन में जो भी चित्र या चरित्र आ रहे हैं, हम उसको ही सही मानते जा रहे हैं। अब आप बताओ कि यदि यह आपका कम्प्यूटर है या आपका मन है तो किसी की हिम्मत है कि बिना आपकी अनुमति के इसे कोई छू भी सके! लेकिन आज सभी छू रहे हैं। इसका अर्थ तो यही

हुआ ना कि आज आप मन के गुलाम हैं अर्थात् ``मेरे'' के गुलाम हैं। आज मेरे जो लोग मुझसे कह रहे हैं, मैं वही कर रहा हूँ। जब आप इनसे दु:खी होते तो `मैं' पर आ जाते हैं अर्थात् कहते हैं कि शांति चाहिए, प्रेम चाहिए, आनंद चाहिए आदि-आदि। साधारण शब्दों में कहें तो आप कहते हैं कि यहाँ कोई किसी का नहीं है, सभी स्वार्थी हैं। आपके मन रूपी कम्प्यूटर में अलग-अलग लोगों की पेन ड्राइव्स लगी हुई हैं जो कि पूर्णतया वायरस से लिप्त हैं या यूं कहें कि ईर्ष्या, द्वेष, नफरत, छल-कपट से भरी हुई हैं। जब ये पेन ड्राइव्स आपके मन में लग जाती हैं तो आपके अन्दर भी यह वायरस आना स्वाभाविक है। आपकी भाषा में यदि हम आपको समझायें तो आप क्या कहते हैं कि कृपया सुनिए... मैं करना नहीं चाहती या चाहता लेकिन बेटा या बेटी की वजह से करना पड़ता है या रिश्तेदारी निभानी पड़ती है। तो कितने मजबूर हैं आप कि आपका मन नहीं कर रहा है लेकिन करना पड़ रहा है तो बन्धन हो गया ना। सम्बन्ध नहीं रहा, यदि सम्बन्ध होता ना तो आप कभी भी दु:खी नहीं होते, हमेशा खुश रहते।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-14

1	2		■	3	4			■	5
6		■	7			■	■	8	
	■	■	■		■	9		■	
■	■	10			■		■	11	
12			■	■	■	13			■
	■	14		■	15		■	16	
	■	■	■	17	■	18		■	■
	■	19				■	■	■	20
■	21		■		■	22			
23			■	24			■	■	

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. अभिमान से मुक्त होने के लिए निरंतर....में स्थित रहो (3)
2. सूरत, शक्ल, स्वभाव (2)
3. वर्तमान काल का, आजकल का, नये जमाने का (4)
4. हाथ, हस्त, ... कार डे दिल यार डे (2)
5. .... की इच्छा नहीं रखनी है, प्रत्यक्ष भेंट (4)
9. सबसे गंदा बनाने वाला.... है, सिनेमा (5)
10. पति, प्रियतम, पिया (3)
11. आँख के ऊपर का पतला आवरण (3)
12. पुरानी दुनिया से दिल लगाना माना....में जाना, नर्क (4)
17. मिलन, मेल-मिलाप (4)
19. सोने की मुद्रा, ठप्पा (3)
20. चमक-दमक, शोभा (3)
21. राज्य, रहस्य, भेद (2)
22. उम्मीद, आसरा, विश्वास (2)

बायें से दायें

1. निरंतर आत्मिक....का अभ्यास ही सेफ्टी का साधन है (3)
3. खींचना, आकर्षित करना (4)
6. नाप, पैमाना, तोल (2)
7. .... रागनी सा तेरा प्यार बाबा, मीठा (3)
8. भीख, याचना (2)
9. वाद्य यन्त्र, ब्रह्मा बाबा के गले में खराबी होने पर बाबा कहते आज....खराब है (2)
10. अर्थ वाला, उद्देश्य वाला (3)
11. पंख, डैना (2)
12. जलयान, जलपोत (3)
13. समस्त, सारा, कुल, सम्पूर्ण (3)
14. नाखून, अंगुलियों का अग्रभाग (2)
15. ....राखे साइयां मार सके न कोय, जिसको (2)
16. ऋण, उधार (2)
18. पैर, कदम, चरण (2)
19. हर बात प्रभू अर्पण कर दो तो आने वाली....सहज अनुभव होगी, समस्यायें (4)
21. पथ, रास्ता, बाट (2)
22. अत्यधिक शानदार, बहुत बड़ा और भव्य (4)
23. आत्मा .... अमर अविनाशी है (3)
24. मनोरंजक दृश्य, हँसी आदि की घटना (3)

- ब्र.कु.राजेश,शांतिवन

हैदराबाद-सुराराम। आध्यात्मिक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करने के बाद उपस्थित हैं दुंडिगल सी.आई. वेंकटेश्वरालू जी, ब्र.कु. ज्योति व ब्र.कु. सीता।

विमान नगर-महा.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. अनीता व पुलिस अधिकारी गण।

चेन्नई। बाढ़ प्रभावित इलाकों के पीड़ित जनों को आवश्यक सामग्री भेंट करते हुए ब्र.कु. देवी व अन्य।

बेसवां-उ.प्र.। मंगलायतन विश्व विद्यालय में 'किसान विकास यात्रा अभियान' के कार्यक्रम में कुलपति डॉ. पावला को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. शशी। साथ हैं ब्र.कु. राज, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. मंजरी, ब्र.कु. सत्यप्रकाश व अन्य।

बांबवडे-कोल्हापुर। बिलासराव हायस्कूल गोगवे में मूल्यों की शिक्षा देने के बाद प्रिन्सीपल लाड सर, पाटील सर एवं साथियों को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. दत्तात्रय,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. क्षमा।

सूरत-अडाजन। बैंक के मैनेजर्स के लिए 'तनाव मुक्ति द्वारा बेहतर ग्राहक सेवा' विषयक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के चीफ रिजनल मैनेजर प्रदीप सैलवेटर, बी.ओ.बी., एस.बी.आई. एवं अन्य बैंक्स के मैनेजर्स एवं ऑफिसर्स, ब्र.कु. दक्षा व ब्र.कु. ऋषि।

ब्रह्मा बाबा के दस कदम

शिव पिता परमात्मा के श्रीमत रूपी कदमों पर अपने कदम रख चलने वाले एक महान हस्ती थे ब्रह्माबाबा, जिनकी महानता को ये सृष्टि न कभी भुला पाई है और न कभी भुला पाएगी। उन्होंने शिव पिता के श्रीमत को न केवल अपने आचरण में ढ़ाला बल्कि उसे अपना जीवन ही बना लिया, शायद इसीलिए वे परमात्मा शिव के समान ही बन गए और इस सम्पूर्ण मानवजाति के प्रजापिता भी। आज वे इस पूरी सृष्टि के लिए एक उदाहरण मूर्त हैं और सभी के आदर्श भी। उनके जीवन को शब्दों में बांधना तो असंभव ही है, फिर भी उनके जीवन के दस सिद्धान्तों रूपी कदमों को हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं जो आपके अपने जीवन को भी उन ऊँचाइयों तक ले जाने में सहायक होगा। आप भी अपने जीवन को दुनिया के सामने एक उत्तम, सम्पूर्ण आदर्श के रूप में प्रस्तुत कर पाएंगे।

1. ब्रह्मा बाप समान उदारचित्त बनो।

जैसे साकार ब्रह्मा बाप विशेष उदारचित्त के गुण से सर्व का उद्धार करने के निमित्त बने, ऐसे फॉलो फादर करो। मंसा-वाचा-कर्मणा, सम्बंध-सम्पर्क सब बातों में उदारचित्त, बड़ी दिल वाले बनो। हर आत्मा की कमियों को समाओ और उन्हें गुण व शक्ति का सहयोग दो। उदारचित्त बनने के लिए सदा इस स्मृति में रहो कि मैं अधिकारी आत्मा हूँ, कभी किसी के भी अधीन नहीं होना। हर प्रकार की अधीनता को समाप्त करने वाली मैं उदाहरण स्वरूप, उद्धारमूर्त, उदारचित्त आत्मा हूँ, इस स्वमान में रहो।

उदारचित्त बनने के लिए ब्रह्मा बाप समान अपने पास सर्व शक्तियों का स्टॉक भरपूर करो। आपका हर संकल्प, हर सेकण्ड दूसरों प्रति हो। मैं मास्टर दाता, वरदाता हूँ, इस स्वमान में रहो।

मैं उदारचित्त, उद्धारमूर्त आत्मा हूँ - इस स्वमान में रह मंसा द्वारा सर्व शक्तियों का दान, वाणी द्वारा ज्ञान दान और कर्म द्वारा गुणों का दान करो, इससे सिद्धि स्वरूप, वरदानी मूर्त बन जायेंगे।

हम पूर्वज आत्मायें सर्व का उद्धार करने के निमित्त हैं, इस स्वमान व पोज़ीशन पर स्थित होकर सर्व आत्माओं को शक्तियों का जल दो। योग की सकाश दो।

2. ब्रह्मा बाप समान पालनहार बनो – जैसे ब्रह्मा बाप ने आप बच्चों को अलौकिक जन्म देने के साथ ऐसी पालना दी जो सबके मुख से यही आवाज़ निकलता 'मेरा बाबा'। ऐसे हर एक से मेरेपन की भासना आये, इसको कहा जाता है बाप समान। जो सम्पर्क में आये उसे रिलेशन की अनुभूति कराओ फिर कनेक्शन सहज हो जायेगा। आप जिनके भी निमित्त बनते हो उनकी पालना कर बड़ा करो जो वे प्रेम और पालना द्वारा अविनाशी वर्से के अधिकारी बन जायें। उन्हें ऐसा शक्तिशाली बनाओ जो वे सदा अपने को विघ्न-विनाशक, शक्ति सम्पन्न हेल्दी और वेल्दी अनुभव करें।

सर्व की पालना करने के लिए अपना जगतमाता, ज्ञान गंगा व महादानी, वरदानी रूप सामने लाओ। इसी स्वरूप में स्थित होकर किसी भी आत्मा को दृष्टि देंगे तो उनको वरदानों की प्राप्ति हो जायेगी। कल्याणकारी भावना से कैसी भी अपकारी आत्मा उपकारी बन जायेगी।

जैसे माँ बच्चों की कमज़ोरियों को व कमियों को नहीं देखती, उसको उसे ठीक करने का ही रहता है। माँ में दो विशेष शक्तियां सहन करने और समाने की होती है। ऐसे हर आत्मा की पालना करने के लिए यह दोनों शक्तियां यूज़ करो तो सफलता ज़रूर होगी।

3. ब्रह्मा बाप समान सर्व के शुभ चिंतक, शुभ भावना, शुभ कामना सम्पन्न बनो।

ब्रह्मा बाप ने अपनी शुभचिंतक वृत्ति से सारे विश्व की सेवा की, सर्व के प्रति शुभ कामना और शुभ भावना रखी, ऐसे फॉलो फादर करो। अपने शुभ संकल्प की किरणें सूर्य के समान विश्व में चारों ओर फैलाओ।

शुभ-भावना अर्थात् शक्तिशाली संकल्प। किसी भी आत्मा के प्रति व बेहद विश्व की आत्माओं के प्रति शुभ भावना रखना अर्थात् शक्तिशाली शुभ और शुद्ध संकल्प करना कि इस आत्मा का कल्याण हो जाए। इसके लिए दो बातों पर अटेंशन रहे - एकान्त और एकाग्रता।

ब्राह्मण परिवार के बीच एक दो के प्रति अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना द्वारा उन्हें परिवर्तन करने में सहयोगी बनो, उनके संस्कारों की कमज़ोरी को जानते हुए भी स्नेह और सहयोग दो। न्यारे नहीं बनो। किनारा नहीं करो, सबके सहारे बनो।

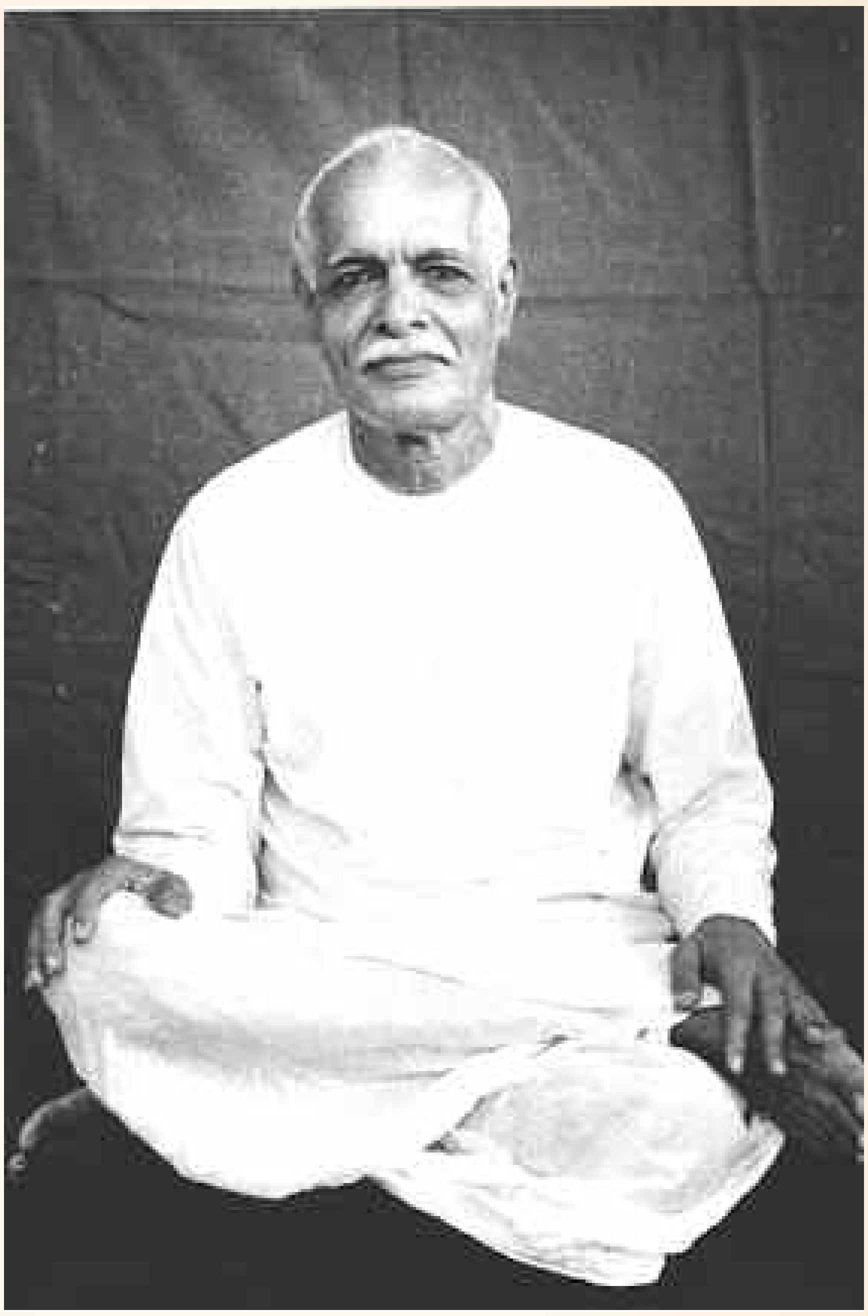

अपनी वृत्ति को शुभ भावना से ऐसा भरपूर करो जो लोगों को वायब्रेशन आये कि कोई शांति का पुंज शांति की किरणें दे रहा है। इसके लिए अपने मन को एकाग्र वृत्ति से, शुभकामना, परोपकारी भावना से सदा भरपूर रखो।

4. ब्रह्मा बाप समान निमित्त और निर्माण बन सबको सम्मान दो।

जैसे साकार रूप में निमित्त बन हर कर्म संयम के साथ करके दिखाया। निर्माण बन बच्चों को रिगार्ड देकर दिखाया। निर्माण बन बच्चों को रिगार्ड देकर राय-सलाह दी। ऐसे संयम प्रमाण एक दो को रिगार्ड दो। सदा यह स्लोगन याद रहे कि जैसी मुझ निमित्त आत्मा की वृत्ति होगी वैसा वायुमंडल बनेगा।

निमित्त भाव की विधि से सेवा में वृद्धि करो। निमित्त बनने के साथ सबके स्नेही भी बनो। स्नेह की कमी रहमदिल और नम्र बनने नहीं देती लेकिन कहीं-कहीं अति स्नेह के कारण निर्माणता का गुण भी नुकसान करता है, इसलिए निर्माणता के साथ मालिकपन का नशा भी रखो।

मैं मास्टर विश्व निर्माता हूँ, इस स्वमान में रहकर हर संकल्प और कर्म करो तो निर्माणता व सरलता का गुण स्वतः आ जायेगा। निमित्त समझकर सेवा करेंगे तो लगाव झुकाव से सहज किनारा हो जायेगा। निमित्त समझने से करावनहार बाप की याद रहेगी और करावनहार स्वामी सदा ही श्रेष्ठ कार्य कराते रहेंगे। इसलिए ट्रस्टी हूँ, निमित्त हूँ, इस स्मृति से सदा हल्के रहो तो निर्णय शक्ति समय पर ठीक कार्य करेगी और सफलता मिलती रहेगी।

5. ब्रह्मा बाप समान बेफिक्र बादशाह बनो।

जैसे ब्रह्मा बाप सदा निश्चय-बुद्धि होने के कारण बेफिक्र बादशाह की स्थिति में रहे, किसी भी बात में क्वेश्चन मार्क का टेढ़ा रास्ता लेने के बजाए कल्याण की बिन्दी लगाई, एक बल एक भरोसा इसी आधार पर अचल-अडोल, एकरस स्थिति बनाई, ऐसे फॉलो फादर करो।

सदा निश्चय रहे कि बाप हमारा रक्षक है, कल्याणकारी है, किसी भी बात में हमारा अकल्याण हो नहीं सकता। सदा यही उमंग रहे कि हमारी विजय हुई पड़ी है। नशा रहे कि विजय हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है तो बेफिक्र बादशाह रहेंगे।

जो कुछ भी होता है - साइडसीन है। साइडसीन को देखकर मंज़िल को छोड़ा नहीं जाता। चलते चलो, पार करते चलो तो मंज़िल समीप अनुभव होगी। नथिंगन्यू की स्मृति से अचल-अडोल बनो, किसी भी दृश्य को देखकर हिलने के बजाए वातावरण को पावरफुल बनाने के निमित्त बनो।

6. ब्रह्मा बाप समान एकांतप्रिय के साथ मिलनसार बनो।

जैसे ब्रह्मा बाबा सदा एकांत में ज्ञान मनन व एक बाप की याद में मगन रहने के कारण रुहानियत की स्थिति में सम्पन्न रहे और बच्चों से मिलने का भी अनुभव कराया। ऐसे प्रतिदिन एकांत में रमण भी करो और मिलनसार भी बनो। अपने दिल की लगन से बीच-बीच में एकांतवासी बनने का समय निकालो। लेकिन एकांत में रमणीकता गायब न हो। दोनों समान और साथ-साथ रहे।

एकांतप्रिय बनना माना यह नहीं कि मिलने से दूर रहना। कोई भी बात अति में अच्छी नहीं होती। एक गुण तूफान मिसल हो, दूसरा मर्ज हो तो अच्छा नहीं, इसलिए दोनों का बैलेंस रहे।

जैसे ब्रह्मा बाप ने एकांतप्रिय बन एकाग्रता - शेष पेज 7 पर...

थकना मत मेरे प्यारों

मैंने देखा कि जब कभी कोई ऐसा थका हुआ व्यक्ति ब्रह्माबाबा के पास आता तो वह उनकी परेशानी को एक सेकण्ड में समाप्त कर देते थे। वे हमेशा कहा करते थे कि परेशान क्यों होते हैं? जब अपनी वास्तविक शान अर्थात् 'हम किसकी संतान हैं' उसको भूल जाते हैं तो परेशान हो जाते हैं। वे हमेशा कहते थे कि जब आप देह से न्यारे रहेंगे तो थकावट नहीं होगी।

दीदी मनमोहिनी

कहावत है कि सच्चा योगी वह है जो निद्राजीत हो। उनके व्यस्त जीवन में मैंने सदा उनको निद्राजीत स्थिति में देखा। पिताश्री शत-शत विश्व कल्याण की सेवा में लगे रहते थे। वैसे तो हम सभी की प्रतिदिन की दिनचर्या ऐसे है जो दिन में 2 से 4 विश्राम का समय है परंतु पिताश्री जी केवल एक घण्टा विश्राम के लिए जाया करते थे। उसमें से भी बहुत कम समय आराम करते थे। उदाहरण के तौर पर जब भाई-बहनें यहां मुख्यालय से प्रस्थान करते समय पिताश्री जी से छुट्टी लेकर आते थे तो मैं हमेशा पिताश्री जी को यही कहती कि आप विश्राम से पहले उन्हें छुट्टी दें। लेकिन नहीं, उनका कहना था कि वह अपने बच्चों को उसी समय छुट्टी देंगे जब उनके जाने का समय होगा चाहे वह विश्राम का समय क्यों न हो। वे सदा हरेक बच्चे की सेवा के लिए तैयार रहते थे।

बाबा की निद्राजीत स्थिति व सर्व आत्माओं के स्नेह का उज्वलंत उदाहरण यह है कि वे हमेशा कहा करते थे कि बच्ची चाहे मैं सोया हूँ, परंतु अगर कोई बच्चा मुझसे मिलने आये तो मुझे तुरन्त जगाना। ऐसा न हो कि कोई बच्चा बाबा से मिलने से वंचित रह जाए।

मैंने देखा कि जब कभी कोई ऐसा थका हुआ व्यक्ति उनके पास आता तो वे उनकी परेशानी को एक सेकण्ड में समाप्त कर देते थे। वह हमेशा कहा करते थे कि परेशान क्यों होते हैं? जब अपनी वास्तविक शान अर्थात् 'हम किसकी संतान हैं' उसको भूल जाते हैं तो परेशान हो जाते हैं। वे हमेशा कहते थे कि जब आप देह से न्यारे रहेंगे तो थकावट नहीं होगी। सदा अपने को आत्मा समझ उस पिता परमात्मा की स्मृति की शान में रहेंगे तो कभी भी परेशान नहीं होंगे। मैंने देखा कि पिताश्री जी सदा इसी खुदाई नशे में रहते थे। सर्व प्रकार के कार्य करते हुए भी उनसे निर्लिप्त रहते। यही है उनकी महानता। पिता

श्री जी के जीवन को देखकर अनेकों ने प्रेरणा ली। हर समय हम बच्चों को भी शिक्षा देते हुए भी वे सदा न्यारा और प्यारा रहते थे। मेरा यह प्रैक्टिकल अनुभव है कि पिताश्री जी 'सदा एक बल एक भरोसे रहते थे।' सदा एक बल एक भरोसा रहने से ही सफलता ही सफलता है। बाबा अपने अंतिम वर्ष में, जबकि वे अपनी कर्मातीत अवस्था के बहुत नज़दीक थे, बहुत ही उपराम रहने लगे थे। हमने देखा बाबा बहुत अधिक समय एकांत में मग्न अवस्था का अभ्यास करते थे। कोई भी बात उनके मन को विचलित नहीं करती थी। योग अभ्यास के द्वारा बाबा का शरीर भी सूक्ष्म हो गया था। वे इस धरती पर फरिश्ते नज़र आने लगे थे। उनका अंग-अंग शीतल रूप में देखा। 'अंग-अंग शीतल होना सम्पूर्णता की निशानी है' यह उनके जीवन से प्रत्यक्ष हो गया था। उन्होंने हमें अपने ज़िम्मेदारी वाले जीवन में वो करके दिखाया जो अनुकरणीय है।

ब्रह्मा बाबा के... - पेज 6 का शेष

के अभ्यास द्वारा साइलेंस की शक्ति प्राप्त कर अनेक आत्माओं को जीयदान दिया। ऐसे फॉलो फादर करो। लाइट-माइट हाउस बन अनेक भटकती हुई आत्माओं को ठिकाने की अनुभूति कराओ।

7. ब्रह्मा बाप समान उपराम और नष्टोमोहा बनो।

जैसे ब्रह्मा बाप कहते - बच्चे यह तन मेरा नहीं, मैंने तो बाबा को लोन पर दिया है, यह हुसैन का घोड़ा है। यह सम्बन्धी भी मेरे नहीं, मैं तो स्वयं उनका बच्चा हूँ, इसी स्मृति से बाबा डबल लाइट बने। ऐसे फॉलो फादर कर देह और देह के सम्बन्धों से उपराम व नष्टोमोहा बनो।

जैसे बापदादा पुराने शरीर का आधार लेते हैं, शरीर में फंस नहीं जाते, ऐसे कर्म के लिए आधार लो और फिर अपने फरिश्ते स्वरूप में स्थित हो जाओ। इसको कहा जाता है मेहमान और महान। इससे उपराम और नष्टोमोहा बन जायेंगे।

इस पुरानी देह को बापदादा द्वारा मिली हुई अमानत समझकर सेवा में लगाओ। यह देह मेरी नहीं, सेवार्थ अमानत है। यह समझकर देह के भान से न्यारा बनो तो बाप समान उपराम व नष्टोमोहा बन जायेंगे।

परिवार में सेवा का पार्ट बजाते ट्रस्टी होकर रहो। मैं पुरुष हूँ, यह स्त्री है - यह भान स्वप्न में भी न आये। आत्मा भाई-भाई है, न कि स्त्री पुरुष, यह निमित्त मात्र सेवा अर्थ सम्बन्ध है। बाकी कम्बाइन्ड रूप आप और बाप हो, इस स्मृति से नष्टोमोहा और उपराम बनो।

8. ब्रह्मा बाप समान प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले बनो।

प्योरिटी की पर्सनैलिटी के आधार से ब्रह्मा बाप वन नम्बर की पर्सनैलिटी की लिस्ट में आ गये। तो फॉलो फादर करो। स्वयं को मन, वाणी और कर्म में सम्पूर्ण प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले बनाओ।

पवित्रता ब्राह्मण जीवन का वरदान है, अपनी निजी वस्तु है। आत्मा की पहली धारणा पवित्रता है। मैं परम पवित्र आत्मा हूँ, सदा इस स्वमान में स्थित रह प्योरिटी की पर्सनैलिटी व अथॉरिटी का अनुभव करो।

जैसे अगरबत्ती की खुशबू खींचती है, वैसे आपके द्वारा सबको प्योरिटी की खुशबू का अनुभव हो। स्वयं का ऐसा स्वरूप बनाओ तो अब तक जो सेवा में एनर्जी और मनी लगानी पड़ती है वह काम आपके प्योरिटी की पर्सनैलिटी करेगी।

सारे दिन में जो भी बातें देखते व सुनते हो, अगर आपके काम की नहीं हैं तो सुनते हुए न सुनो, देखते हुए न देखो अर्थात् किसी की व्यर्थ बुराई को टच नहीं करो तब कहेंगे सच्चे वैष्णव व प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले।

9. ब्रह्मा बाप समान देह में रहते विदेही (अशरीरी) बनने का अभ्यास करो।

जैसे बाप सर्व के स्नेही तब बने जब देह में रहते विदेही बने। ऐसे विदेही बनने का अभ्यास करो। जैसे वस्त्र उतारना और पहनना सहज है, ऐसे अभी-अभी शरीर रूपी वस्त्र धारण किया, अभी-अभी उतारा, यही मुख्य पुरुषार्थ करो तो मुख्य रत्नों में आ जायेंगे।

एक सेकण्ड में निराकार और एक सेकण्ड में साकार - अब ऐसी ड्रिल करो। आवाज़ में आते भी आवाज़ से परे रहने का अभ्यास करो। यही विदेही स्थिति का अभ्यास है, जिससे कर्मातीत स्थिति की समीपता का अनुभव होगा।

इस आकृति (देह) के अंदर जो आकर्षण रूप आत्मा है उसको देखने का अभ्यास करो। स्वयं की व दूसरों की आकृति को देखते हुए भी न देखो, देह की स्मृति से परे विदेही रहने का अभ्यास करो तो व्यर्थ संकल्प व कर्म से छूट जायेंगे।

10. ब्रह्मा बाप समान एवररेडी बनो।

जैसे ब्रह्मा बाप सदा एवररेडी अर्थात् सर्व शक्तियों से सम्पन्न रहे - ऐसे फॉलो फादर करो। अभी-अभी ऑर्डर हो कि दृष्टि को एक सेकण्ड में रुहानी व दिव्य बनाओ तो उसमें देह-अभिमान का ज़रा भी अंश न हो, एक सेकण्ड के बजाए दो सेकण्ड भी न लगे तब कहेंगे एवररेडी।

बाप समान एवररेडी रहने के लिए अपने हिसाब-किताब रूपी वृक्ष को लगन की अग्नि में समाप्त कर बीजरूप स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करो। जब चाहो देहभान रूपी वस्त्र को धारण करो और जब चाहो न्यारे हो जाओ।

रुहानी सम्बंध और सम्पर्क निभाने में एवररेडी बनो। संस्कार मिटाने व मिलाने में टाइम न लगे। जैसे वह रास करते हो ऐसे बाप के संस्कार से संस्कार मिलाने की रास, आपस में श्रेष्ठ संस्कार मिलाने की रास करने में होशियार बनो।

जैसे मिलिट्री वालों का बिस्तरा हर समय तैयार रहता है, ऐसे आपका यह संकल्पों रूपी बिस्तरा सदा तैयार रहना चाहिए, एक सेकण्ड में अपने व्यर्थ संकल्पों को स्टॉप कर लो, ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर हो तब अंत समय में अपनी कमज़ोरियों को प्रायः लोप कर एवररेडी बन सकेंगे।

ब्रासिलिया-ब्राज़िल। ज्ञानचर्चा के पश्चात भारत के यूनियन ट्रान्सपोर्ट मिनिस्टर नितिन गडकरी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कविता व ब्र.कु. मीता।

लुधियाना-पंजाब। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के कार्यक्रम में डिस्ट्रीक्ट एग्रीकल्चर ऑफिसर सरदार सुखपाल सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राज दीदी।

मुरादाबाद। द बार एसोसिएशन में 'खुशनुमा ज़िन्दगी के लिए न्यायिक क्षेत्र में राजयोग की भूमिका' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. पुष्पा दीदी,दिल्ली, सुप्रीम कोर्ट के रजिस्ट्रार ब्र.कु. एम.वी.रमेश, प्रभारी जनपद न्यायाधीश अरविंद कुमार, रिटायर्ड सत्र न्यायाधीश राकेश कुमार उपाध्याय, एडिशनल जज मनोज कुमार व बार एसोसिएशन के अध्यक्ष राकेश जी।

तिनसुकिया-असम। व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में बायें से ब्र.कु.रजनी, ब्र.कु. हीरल, ब्र.कु.योगिनी, आई.ओ.सी.एल. डिगबोई के एक्ज़ीक्युटिव डायरेक्टर अमिताभ मिश्र व ब्र.कु. मोहन।

राँची-बिहार। 'सफलता की कुंजी, आध्यात्मिक मूल्य एवं एकाग्रता' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए गिरीश रावल,डी.ए.जी.,महालेखाकार, जटाशंकर चौधरी,कृषि निदेशक, तनुजा पाणीग्रही,प्राचार्य,डी.ए.वी. पुनदाग, सुनीता कुमारी,प्राध्यापिका,मारवारी कॉलेज, ब्र.कु. भगवान, ब्र.कु. निर्मला व अन्य गणमान्य जन।

हरदोई-उ.प्र.। 121 भाई बहनों के अलौकिक जन्मोत्सव एवं दीपावली महोत्सव के कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. विद्या,कानपुर, ब्र.कु. रोशनी व ब्र.कु. भाई बहनें।

विचारों की तरंगें दूसरे तक तेज़ी से पहुंचती हैं

गतांक से आगे...

जैसे भावनाओं को या तरंगों को आप अंदर छोड़ते हैं, तो वो तरंग फिर वायब्रेट होकर के आपके पास ही आती है। ऐसे अगर हम निगेटिव तरंगों को छोड़ेंगे तो वही तरंगें हमारे पास वापिस आयेंगी, जो हमारी मानसिक शांति को भंग कर देंगी। इसलिए जितना हो सके उतने शुद्ध तरंगों को फैलाओ। एक बहुत ही सुंदर कहानी है कि किस प्रकार वो तरंगें हमारे पास वापिस आती हैं।

एक राजा था। उसका एक मित्र था, जो लकड़े का व्यापारी था। दोनों में बहुत अच्छी दोस्ती थी। बचपन के दोनों दोस्त थे। फिर भी वो दोस्ती दोनों की कायम रही। एक दिन वो लकड़े का व्यापारी अपने लकड़े के गोदाम में गया। सारा स्टॉक देखते-देखते चंदन के लकड़े के पास आया और देखा इतना सारा चंदन का लकड़ा पड़ा है। उसका बिज़नेस माइंड चलने लगा कि कितने पैसे मेरे इसमें रुके हुए हैं। अब ये पैसे निकलेंगे कैसे? इतना लकड़ा कौन खरीदेगा? बिना मतलब का इतना चंदन का लकड़ा क्यों खरीद लिया? ऐसे विचार चलने लगे। फिर उसके मन में विचार आया कि कोई अगर मरता है तो ...क्योंकि मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति ये है कि मन में पहले निगेटिव विचार आता है। उसके मन में विचार आया कि कोई साधारण व्यक्ति मरेगा तो इतना सारा चंदन का लकड़ा जलाने के लिए लेकर नहीं जायेगा। कोइ बड़ा व्यक्ति मरेगा तो उसको जलाने के लिए तो चंदन का ही लकड़ा लगायेंगे।

बड़ा व्यक्ति कौन है? राजा के सिवाय तो कोई और बड़ा व्यक्ति है नहीं। राजा उसका दोस्त था, मित्र था फिर भी लोभ लालच जहाँ आयी वहाँ मित्र को भी नहीं देखते। फिर उसके मन में विचार आया कि राजा की तो अभी उम्र ही नहीं है मरने की। तो कैसे वह मरेगा? अगर कोई आस-पास के प्रदेश वाले चढ़ाई करें, तब तो राजा मर सकता है। लेकिन आस-पास के सभी प्रदेश वालों के साथ राजा की अच्छी दोस्ती है। तो कोई उसके ऊपर चढ़ाई करने वाला भी नहीं है। यदि कोई उसको खत्म कर दे, तब तो वो मर सकता है। लेकिन खत्म कौन करेगा, सभी प्रजा उससे इतनी संतुष्ट है, इतनी खुश है कि कोई उसे खत्म क्यों करेगा? फिर उसके मन में विचार आया कि मैं ही उसको खत्म कर दूं। तो उसको जलाने के लिए चंदन के लकड़े यूज़ होंगे। मैंने यदि राजमहल में कहीं उसको मारा तब तो मुझे पकड़ लेंगे और मुझे सजा हो जायेगी। हाँ, जब मैं राजमहल में राजा के साथ जाता हूँ या कहीं बाहर भी जाता हूँ तो किसी को मेरे ऊपर शक होगा ही नहीं, क्योंकि सभी जानते हैं कि हमारी अच्छी दोस्ती है।

विचार कीजिए, व्यक्ति के विचार एक के बाद एक उसको कहाँ तक पहुंचा देते हैं। लेकिन राजा को मारने की हिम्मत उसमें थी नहीं। जब हिम्मत ही नहीं थी,तो वह क्या करेगा? विचार चलते रहे कि राजा मरे तो कैसे मरे। राजा मरे तो कैसे मरे.. ताकि मेरे चंदन के लकड़े खत्म हो जायें।

अब ये विचारों की तरंग, वहाँ राजा तक पहुंचती है। वहाँ राजा सोचता है कि ये जो मेरा मित्र लकड़े का व्यापारी है, इतना पैसे वाला है, लेकिन ये किसके लिए कमाता होगा? उसके आगे-पीछे कोई है तो नहीं, तो ये कमाई किसके लिए करता है। तब राजा के मन में विचार आया कि ऐसा भाई जिसके आगे-पीछे कोई है ही नहीं वो अगर मर जाये तो उसकी सारी प्रॉपर्टी राज्य को मिल जायेगी। राजा भी सोचने लगा कि ये मरे, तो कैसे मरे। ताकि इसकी सारी प्रॉपर्टी राज्यकोष में आ जाये। अब दोनों की इतनी गहरी दोस्ती, लेकिन अब दोनों जब एक-दूसरे के सामने आते हैं तो कौन सी भावना से आते हैं। वो दोस्ती का भाव, वो प्रेम का भाव समाप्त हो गया है। दोनों के मन में एक ही विचार आता है, वो सोचता है कि ये मरे तो कैसे मरे और दूसरा सोचता है कि ये मरे तो कैसे मरे? वायब्रेशन्स में जैसी तरंगें हमने छोड़ी वैसी ही तरंगें हमारे पास आती हैं। आखिर जब दोनों का मन बड़ा परेशान हो गया, तो रात-रात भर दोनों को नींद नहीं आती है। दोनों पास पलटते रहते हैं, नींद आती ही नहीं है। तब वो व्यापारी इतना परेशान होकर राजा के पास गया और राजा से हाथ जोड़कर के कहने लगा हे राजन! मैं माफी मांगने आया हूँ। राजा ने कहा माफी किस बात की, तुमने कौन सा गुनाह किया है? व्यापारी ने कहा कि मैंने कोई गुनाह किया नहीं है, लेकिन मेरे मन में एक कुविचार आ गया है। अब वो कुविचार निकलता ही नहीं है। मैं इतना परेशान हो गया हूँ जो पता नहीं कि मैं क्या करूं? रात-रात भर मुझे नींद नहीं आती है। उसने अपने मन के विचार राजा के सामने रखे। - क्रमशः

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

साक्षी होना ही - पेज 2 का शेष

आलिंगन कर लेता है, सुख को तो जल्दी से ओढ़ लेता है। सुख के साथ भी यही करना। वह भी बदली है। वह भी आया-गया मेहमान है।

अगर तुम सुख और दुःख दोनों को देख सको तो तुम्हारे भीतर जो अवस्था पैदा होगी उस अवस्था का नाम सहज है, साक्षी है। सहजयोगी है। पहले तो क्षण भर को बनेगी यह बात, मगर क्षण भर को बन तो गई। पहले तो क्षण भर को झलक मिलेगी साक्षी की, मगर उतनी झलक ही काफी है। स्वाद एक बार आ जाये, बस आप चकित हो जाओगे कि कितना अपूर्व रस बहता है। उस क्षण में! कैसी अमृत की धार बरस जाती है! न दुःख, न सुख- उस अवस्था को महासुख कहा है। न दुःख न सुख। ख्याल रखना, महासुख शब्द से धोखे में मत पड़ जाना। शब्द का कोई उपयोग तो करना ही पड़ेगा। कोई उस अवस्था को आनंद कहता है, मगर उसमें भी वही भूल हो जाती है, क्योंकि आप समझते हो आनंद यानी सुख की महा राशि।

बुद्ध का शब्द ज़्यादा उचित है। बुद्ध शांति शब्द का उपयोग करते हैं - परम शांति! सब शून्य हो जाता है। एक निर्विकार दशा। कुछ कहना उठता ही नहीं, कुछ गिरता नहीं, कुछ जाता नहीं! एक सन्नाटा! एक अपूर्व शांति। मगर महासुख उसमें है। सहज निर्माण शांत अवस्था...! और इस अवस्था को तुम जान लो तो तुम्हें पता चलेगाः न तो इसका कोई आदि है न अंत, न तो यह कभी शुरु होती है और न कभी इसका कोई अंत। और स्वभावतः जिसका आदि न हो अंत न हो, उसका कोई मध्यम भी नहीं होता। यह शाश्वत है। यह सनातन है। यही है सनातन धर्म! यही सहज है।

गया-ए.पी.कॉलोनी। 'भारतीय समाज में नारी का महत्व' विषय पर अपना विचार व्यक्त करने के पश्चात समूह चित्र में ब्र.कु.सुनीता तथा अग्रणी महिलाएं।

जमनीपाली-कोरवा(छ.ग.)। अम्बेडकर भवन,एन.टी.पी.सी. में आयोजित 'वाह ज़िन्दगी वाह' शिविर के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. ई.वी. स्वामीनाथन,मुम्बई।

कथा सरिता

अमूल्य धरोहर

बहुत समय पहले विराट नगर के राजा नरेन्द्र सिंह थे। एक बार विराट नगर पर पड़ोसी राज्य श्याम नगर ने आक्रमण कर दिया। राजा अपनी प्रजा का बहुत ध्यान रखते थे इसलिए उन्होंने राज्य के सभी लोगों को परिवार सहित किसी सुरक्षित स्थान पर जाने को कह दिया। श्याम नगर की सेना विराट नगर की राजधानी में घुस गई। सेना ने नरेन्द्र सिंह और उनके साथ चल रहे कुछ लोगों को घेर लिया। नरेन्द्र सिंह ने सेनापति से कहा, `मेरे साथ चल रहे इन दस लोगों को छोड़ दो तो मैं आत्म समर्पण कर दूंगा।' सेनापति ने उन लोगों को छोड़ दिया और राजा नरेन्द्र सिंह को कैद कर लिया। सेनापति ने जब श्याम नगर के राजा के सामने राजा नरेन्द्र सिंह को प्रस्तुत किया तो उसने दस लोगों को राजा के कहने पर छोड़ने वाली बात भी बताई। श्याम नगर के राजा को यह सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। उसने नरेन्द्र सिंह से उसका कारण पूछा तो वह बोला, `वे मेरे राज्य के संत और विद्वान थे। मेरे होने, न होने से राज्य में कोई अंतर नहीं पड़ेगा लेकिन किसी राज्य के हित के लिए वहां के संत और विद्वानों का बचे रहना ज़रूरी है। ये राज्य की अमूल्य धरोहर हैं। इन्हीं के दिए संस्कारों से राज्य में कर्त्तव्यनिष्ठ और योग्य नागरिकों का निर्माण होता है।' श्याम नगर के राजा ने प्रभावित होकर नरेन्द्र सिंह को छोड़ दिया और साथ ही उसका राज्य भी वापस कर दिया।

सपने का भ्रमजाल

विवेक नगर के राजा चंद्रसिंह थे। एक रात उन्होंने सपना देखा कि उनके राज्य में विद्रोह हो गया है। प्रजा ने उनका अपमान करके उन्हें निकाल दिया। वे भूख-प्यास से बेहाल घूम रहे हैं। तभी उन्हें एक सेठ की हवेली के आगे भूखे और गरीब लोग दिखाई दिए जिन्हें सेठ रोटी सब्जी बांट रहा था। उन्हीं में राजा भी जाकर खड़े हो गए और सेठ से रोटी-सब्जी खाने को ले ली। वे खाने ही लगे कि दो गायें लड़ती हुई वहां आई और लोगों की भगदड़ में उनके हाथ से रोटी-सब्जी गिरकर मिट्टी में मिल गई। राजा दु:खी और निराश होकर रोने लगे, तभी राजा की आँख खुल गई। सुबह हो चुकी थी। वे अपने महल में शैया पर लेटे हुए थे और महल के बाहर भाट उनकी जयकार कर रहे थे। राजा सोच में पड़ गए कि आखिर सच क्या है! उनका राजा होना या भूख से व्याकुल होकर रोटी के लिए रोना। उस दिन राजा दरबार में जल्दी पहुँच गए। उन्होंने जाते ही राज-ज्योतिषी और पंडितों से अपने सपने के बारे में पूछा तो कोई नहीं बता पाया। तभी संयोग से दरबार में उनके गुरु परमानंद वहां आ गए। उन्हें देख राजा आश्वस्त हुए। उन्होंने गुरू से पूछा तो वे बोले, `राजन, चिंतित न हों। न यह सपना सच्चा है और न आपका राजा होना। दोनों ही भ्रमजाल है। इस दुनिया में कुछ भी शाश्वत नहीं है।' गुरू की बात से राजा की बेचैनी दूर हो गई थी।

दयालु लकड़हारा

बहुत समय पहले किशनपुर गांव में रामू नाम का एक गरीब लकड़हारा रहता था। वह दूसरों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहता। जीवों के प्रति उसके मन में बहुत दया थी। एक दिन वह जंगल से लकड़ी इकट्ठी करने के बाद थक गया तो थोड़ी देर सुस्ताने के लिए एक पेड़ के नीचे बैठ गया। तभी उसे सामने के पेड़ से चिड़िया के बच्चों के ज़ोर-ज़ोर से चीं-चीं करने की आवाज़ सुनाई दी। उसने सामने देखा तो डर गया। एक सांप घोसले में बैठे चिड़िया के बच्चों की तरफ बढ़ रहा था। बच्चे उसी के डर से चिल्ला रहे थे। रामू उन्हें बचाने के लिए पेड़ पर चढ़ने लगा। सांप लकड़हारे के डर से नीचे उतरने लगा। उसी दौरान चिड़िया भी लौट आई। उसने जब रामू को पेड़ पर देखा तो समझा कि उसने बच्चों को मार दिया। वह रामू को चोंच मार-मारकर चिल्लाने लगी। उसकी आवाज़ से और चिड़िया भी आ गई। सभी ने रामू पर हमला कर दिया। बेचारा रामू किसी तरह पेड़ से नीचे उतरा। चिड़िया जब घोसले में गई तो उसके बच्चे सुरक्षित बैठे थे। बच्चों ने चिड़िया को सारी बात बताई तो उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। वह रामू से माफी मांगना चाहती थी और उसका शुक्रिया अदा करना चाहती थी। उसे कुछ दिन पहले दाना ढूंढ़ते हुए एक कीमती हीरा मिला था। उसने हीरे को अपने घोसले में लाकर रख लिया था। चिड़िया ने वह हीरा रामू के आगे डाल दिया और एक डाली पर बैठकर अपनी भाषा में धन्यवाद करने लगी। रामू ने हीरा उठा लिया और चिड़िया की तरफ हाथ उठाकर उसका धन्यवाद किया और वहां से चल दिया। तभी कई चिड़िया आईं और उसके ऊपर उड़कर साथ चलने लगीं मानो वे उसका आभार करते हुए विदा करने आई हों।

जो बोओगे, वो काटोगे

रामपुर गांव में हरिचरण नाम का एक किसान रहता था। उसके दो बेटे थे शिवा और सुंदर। शिवा समझदार था और सुंदर बहुत ही भोला और कम समझ वाला था। हरिचरण बेटों को शुरू से ही एक सीख देता आ रहा था, `जो बोओगे, वो काटोगे।' हरिचरण अब बूढ़ा हो गया था और बीमार भी रहने लगा था। एक दिन उसने सारी ज़मीन और रुपए दोनों में बराबर-बराबर बांट दिए। इसके कुछ ही दिनों बाद हरिचरण का स्वर्गवास हो गया। शिवा ने पिता के पैसों से अच्छा बीज खरीदा और खेत में बो दिया। सुंदर को पिता की सीख याद थी `जो बोओगे, वो काटोगे' इसलिए उसने यह सोचकर कि रुपए बोऊंगा तो खेत में रुपयों की फसल होगी, मैं बहुत जल्दी धनवान हो जाऊंगा, उसने खेत जोतकर रुपए बो दिए। शिवा के खेत में फसल लहलहाने लगी लेकिन सुंदर का खेत ज्यों का त्यों पड़ा हुआ था। काफी दिन बीत गए, जब एक भी अंकुर नहीं फूटा तो वह चिंता में घुलने लगा और बीमार सा दिखने लगा। एक दिन शिवा ने कारण पूछा तो उसने बता दिया। सुनकर शिवा को सुंदर की नासमझी पर दया आई। उसने भाई को पिता की दी हुई सीख समझाई कि दूसरों के साथ जैसा व्यवहार करोगे तुम्हें बदले में वैसा ही मिलेगा। किसी के साथ भलाई करोगे तो भलाई मिलेगी और बुरा करोगे तो बुरा। वह फिर भाई के साथ खेत पर गया और सारे पैसे निकलवाए। उनसे बीज खरीदकर बुवाए। जब अच्छी फसल आई तो सुंदर की समझ में आया कि खेत में तो बीज ही बोए जाते हैं।

बिलासपुर-छ.ग.। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री माननीय डॉ. रमन सिंह को ईश्वरीय संदेश देने के बाद सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रमा। साथ हैं अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

मोहाली फेज़ 7-पंजाब। विधायक बलबीर सिंह सिद्धू 'किसान सशक्तिकरण अभियान' यात्रियों का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए।

सासाराम-बिहार। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए डी.पी.एम. आचार्य मरमठ, भूमि संरक्षण अधिकारी जयनाथ सिंह, जिला परिषद अध्यक्ष प्रमिला सिंह, बहमन महासभा अध्यक्ष निर्मल दूबे, डॉ. कृति परासर, ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. सुनीता व अन्य।

सादड़ी-राज.। जैन समाज की ओर से ब्र.कु. शुचिता को समाज सेवा में उत्कृष्ट व अवर्णनीय कार्यों के लिए सम्मानित करते हुए जैन समाज के सदस्यगण। साथ हैं ब्र.कु. कविता।

इंदौर। सड़क दुर्घटना में पीड़ितों की याद में 'विश्व यादगार दिवस' पर ट्रान्सपोर्ट एवं ट्रैवल्स विंग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सुरक्षित यातायात के लिए नियमों का पालन करने की प्रतिज्ञा करते हुए बायें से पेट्रोल पंप संचालक शिवलाल पटेल, ट्रैफिक डी.एस.पी धरम लाल पटेल, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. हेमलता, ऑटो मोबाइल एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रवीण पटेल व ब्र.कु. सोनाली।

नौगाँव-म.प्र.। कृषि विज्ञान केन्द्र में ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में कृषि विज्ञान केन्द्र की वरिष्ठ अधिकारी वीणा पाणी, कृषि विकास अधिकारी बी.एन. राय, ब्र.कु. नन्दा तथा अन्य अधिकारीगण।

'एक प्रेम ही' है... स्वर्ग लाने का

किसी को चाहना, उसके पास रहना, उसके साथ रहना, उसको अपना सबकुछ समझना, समर्पित हो जाना, शायद प्रेम की पराकाष्ठा हो सकती है, क्योंकि कहते हैं प्रेम ईश्वर का दूसरा नाम है, तो इस 'प्रेम' नाम के साथ न्याय तो हम तब कर पायेंगे जब हमारी स्थिति ईश्वर जैसी हो जाये।

प्रेम क्या है, प्रेम व्यक्ति के भीतर निहित एक रचनात्मक ऊर्जा का नाम है जो उसे दूसरों से जोड़ती है। हम यह कहें कि प्रकृति में यदि प्रेम न हो तो जीना असम्भव हो जाएगा, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। मानव यद्यपि प्रकृति का ही एक हिस्सा है, फिर भी प्रकृति से ऊपर उठने के लिए, खुद को अभिव्यक्त करने के लिए मनुष्य नये-नये आयाम रचता है। मनुष्य जानता है कि सबकी दृष्टि में, सबके मध्य रहने के बावजूद भी कहीं न कहीं वह अकेला है। आप देखिए कि इसी कारण से वो दूसरों से जुड़ना चाहता है। शायद परिवार और समाज उसकी इसी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं।

यदि हम इसको अन्य भाषा में समझने की कोशिश करें तो प्रेम अपने 'मैं' का एक विस्तार है। हम पहले 'वह' फिर 'सब' होने लगते हैं। यहां पर समानता व्यक्ति को अलग होने से बचाती है। क्योंकि हर व्यक्ति न सिर्फ अलग है बल्कि उसकी अपनी एक अलग उपयोगिता है। सुबह से शाम तक व्यक्ति अपनी दिनचर्या में चलते हुए भूल जाता है कि उसकी पहचान क्या है। इस बने बनाये मानवीय और सामाजिक ढर्रे वाली ज़िन्दगी के अलावा और कुछ है भी, और इसे जानने का उपाय क्या है। वह 'कुछ और' ढूंढ़ने दूसरे के पास जाता है जो 'है' उसी के भीतर, पर वह उसे जान 'दूसरे' के माध्यम से पाता है। हम अपनी आँखों से सब देखते ज़रूर हैं पर आँख को देखने के लिए हमें किसी

और का सहारा लेना पड़ता है। दूसरों की आँखों में ज़रा सा सम्मान, आदर देखकर मनुष्य कितना आनंदित होता है क्योंकि वह उसी के माध्यम से अपनी ज़िन्दगी के अलग-अलग पहलुओं को जान पाता है। जब व्यक्ति दूसरे से जुड़ता है, इसका अर्थ यह हुआ कि उसी के साथ वह बाहर की दुनिया से भी जुड़ता है। परन्तु विडम्बना या उलझन यह हो जाती कि वह जुड़ना चाहता है, कुछ देना चाहता है, लेकिन बदले में कुछ पाना चाहता है। लेकिन केवल प्रेम के ही माध्यम से यह संभव है, किंतु प्रेम देना सिखाता है लेना नहीं सिखाता।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए जब उसे कोई नहीं मिलता तो वो भीड़ का सहारा लेता है, शायद इसी लिए भीड़ का निर्माण होता है, जहां व्यक्ति अकेला नहीं होता, कोई दूसरा उसे सहारा देता है, रास्ता दिखाता है, सुरक्षा का आश्वासन देता है। अब इसमें गड़बड़ ये होती है कि व्यक्ति खुद को दूसरे में विलय कर देता है और उसकी इच्छाओं का पुतला बन जाता है, इस तरह के व्यक्तियों को न कोई निर्णय लेना पड़ता है और न जोखिम उठाना पड़ता है, न वे अकेले होते हैं। वे दूसरों की हाथों की कठपुतली बन अपनी पहचान खो चुके जीव बन जाते हैं। ऐसे लोगों की आज दुनिया में बहुत अधिकता है।

7 कदम राजयोग की ओर...

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: बाबा ने कहा बच्चे तुम्हें मन को जीतना है, परंतु मन को जीतना तो असंभव सा ही है। बड़ी तीव्र गति मन की है। यह काम कठिन है परंतु इसे सरल बनाना चाहते हैं...कोई उपाय बताएं।

उत्तर: मन की गति सचमुच ही बड़ी चंचल है। साधना से ही इसे साधा जा सकता है। इसकी घोड़े समान चंचलता को शक्तियों की लगाम से ही वश में किया जा सकता है। कुछ अभ्यास इस प्रकार कर सकते हैं–

कल्प पहले मैंने ही मन को जीता है। इसलिए ही यह यादगार बना कि मन जीते जगत जीत। इसे बार-बार स्मृति में लायें। मन को जीतने वाले ही स्वराज्य अधिकारी हैं। वे ही विश्व राज्याधिकारी बनते हैं। शक्तियों की लगाम से मन को कंट्रोल करो।

इसके लिए बार-बार अभ्यास करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ। सभी परमात्म शक्तियाँ मेरे पास हैं। मैं मन का मालिक हूँ। भृकुटि सिंहासन पर विराजमान हूँ। तो जैसा हम बार-बार स्वयं को मानेंगे, वैसा ही बन जायेंगे। मन को साधने हेतु तपस्या तो करनी ही पड़ेगी।

दो तरह के अभ्यास से यदि हम मन की गति को धीमा करें तो मन को ब्रेक लगाना सरल होगा, वे दो साधनाएं हैं– 1. पाँच स्वरूपों की साधना, 2. स्वमान की साधना। यूं तो इन्हें अत्यधिक करना चाहिए परंतु अमृतवेले के अतिरिक्त सारे दिन में तीन बार बैठकर पंद्रह-पंद्रह मिनट ये साधनाएं करें। इससे मन आनंदित होगा व शांत होगा।

जिस स्वरूप को स्मृति में लायें, उसके बारे में चिंतन करें व उसी स्वरूप में देखें। मन-जीत का अर्थ ही है कि हम जिस स्वरूप पर जितना समय स्थित होना चाहें, सहज ही हो सकें। मन भटके नहीं। जिन्हें ये महान प्राप्ति करनी है, उन्हें व्यर्थ सुनने, देखने, बोलने पर अंकुश लगाना होगा, अपनी पवित्रता बढ़ानी होगी व अंतर्मुखी बन सच्चे दिल से साधना करनी होगी।

प्रश्न: अचानक ही मेरे जीवन में उदासी व एकाकीपन छा गया है, इसका कोई कारण भी समझ में नहीं आ रहा। इससे मुक्त होने के लिए मैं क्या करूँ?

उत्तर: यह स्थिति पूर्व जन्मों के विकर्मों के कारण ही है। जो भी पूर्व जन्म में विकर्म हुए हैं वह सब अचेतन मन में अंकित हैं। अब उनसे अति घातक तरंगें ब्रेन को जा रही हैं। किसी को भय सता रहा है तो किसी को अकेलापन महसूस हो रहा है। कोई अनिद्रा का शिकार हो गया है। इस समस्या का इलाज डॉक्टरों के पास भी नहीं है। क्योंकि मन के लिए कोई दवाई नहीं होती है, दवाइयां ब्रेन के लिए होती हैं।

अब से नियमित 108 बार लिखना कि मैं एक महान आत्मा हूँ। सवेरे जल्दी उठकर एकांत में शिवबाबा से रूह-रिहान करें। मन में यदि कोई चिंता हो तो परेशान न हों क्योंकि हर समस्या का हल आपके पास ही है।

जीवन में हार-जीत, मान-अपमान, दु:ख-सुख सब आते ही हैं, उन्हें हल्के में लेकर पुन: 5 स्वरूपों का अभ्यास सारे दिन में 16 बार अवश्य करें व राजयोग का अभ्यास 2 घंटे नियमित करें।

प्रश्न: भाग्य क्या है? भाग्य किसको कहते हैं, भाग्य किस चीज़ का नाम है?

उत्तर : हर क्रिया, हर कार्य का एक परिणाम है। परिणाम अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी हो सकता है। यह परिणाम ही भाग्य है। तथा आज का प्रयत्न ही कल का भाग्य है...!!

प्रश्न: इस जगत में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?

उत्तर: रोज़ हज़ारों लाखों लोग मरते हैं, उन्हें सभी देखते भी हैं, फिर भी सभी को अनंत काल तक जीते रहने की इच्छा रहती है, इससे बड़ा आश्चर्य और क्या हो सकता है!

प्रश्न: दुनिया की सबसे बुरी लत कौन सी है?

उत्तर: मोह, और मोह से आदमी का विवेक नष्ट हो जाता है, मोह मनुष्य के मानस पटल पर और बुद्धि पर ऐसा आवरण डाल देता है जिससे वे सही निर्णय करने में असमर्थ हो जाता है। दुनिया में मोह ही के कारण कई राजाओं को राजाई गंवानी पड़ी। मोह परिवारों को नष्ट कर देता है। इसलिए सबसे बुरी इस आदत को अच्छी तरह से समझना होगा और बहुत ही सूक्ष्मता से इसकी जड़ को उखाड़ फेंकना होगा।

प्रश्न: धर्म से बढ़कर संसार में और क्या है?

उत्तर: धर्म से बढ़कर संसार में दया है! वर्तमान परिदृश्य में धर्म को ठीक-ठीक रूप से न समझने के कारण एक आडम्बर का रूप नज़र आता है। यह धर्म पहले हमारी संस्कृति हुआ करती थी और आज वही संस्कृति के नाम से हर तरफ बहुत हल्ला-हंगामा करते हैं पर संस्कृति में सभ्यता को भी हमें लाना होगा। संस्कृति भी और सभ्यता भी हो, वो तब आयेगा जब हम उसके आध्यात्मिक स्वरुप को समझेंगे और हमारे नेचर में दया को स्थान देंगे।

प्रश्न: संसार में दु:ख क्यों है?

उत्तर: लालच, स्वार्थ और भय ही संसार में दु:ख के मुख्य कारण हैं। यदि इन तीनों चीज़ों को मनुष्य सूक्ष्मता से देख ले, परख ले और समझपूर्वक उसपर चिंतन करे और उससे मुक्त होने का प्रयास करे तो नि:संदेह वह इंसान सुखी रहने में कामयाब हो जायेगा और दु:ख उसके जीवन से कोसो दूर चला जायेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

Peace of Mind
For Cable & DTH
+91 8104777111
TATA Sky 192 airtel digital TV 686 videocon d2h 497 RELIANCE Digital TV 171
"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83*E

पिताश्री कहते कि, आप किंग ऑफ फ्लावर हो...

आपने अपने जीवन में अनेको उद्यान एक-दो से बढ़-चढ़कर देखे होंगे और उसमें विभिन्न प्रकार के फूल, फल भी देखे होंगे। लेकिन क्या आपने कोई चैतन्य फूलों का बगीचा देखा है? ऐसा बगीचा जिसमें मनुष्यात्माएं फूलों के समान हों और जिन फूलों के बगीचे को एक विचित्र माली विचित्र प्रकार से दैवीगुण सम्पन्न एवं खुशबूदार बना रहा हो, पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा एक ऐसे ही विचित्र माली थे जो 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' नामक एक ऐसा ही अलौकिक, चैतन्य एवं विविध प्रकार के फूलों का बगीचा बनाने के निमित्त बने और अपने पार्थिव शरीर के त्याग के अंतिम क्षण तक इस अनुपम बगीचे को ईश्वरीय ज्ञानामृत से सींचते रहे। आज भी वो (माली) जैसे अपने साकार रूप में उपस्थित हैं।

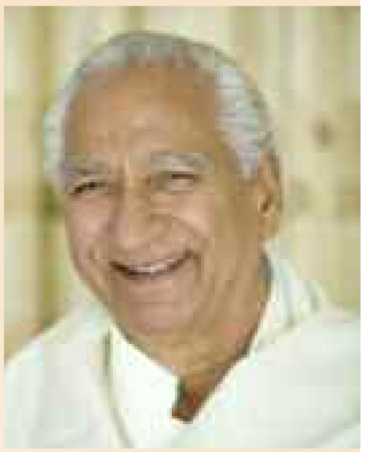

ब्र.कु.निर्वैर,महासचिव,ब्रह्माकुमारीज़

आबू स्थित पाण्डव भवन में बापदादा ने एक छोटा-सा बगीचा जड़ फूलों का भी तैयार किया था जो आज भी उनकी स्मृति दिलाता है। बापदादा जब भी इस बगीचे में जाते थे, वे फूलों को बड़े प्यार से देखते थे और बड़े गहरे विचारों में चले जाते थे। पुनश्च, चैतन्य फूलों के बगीचे में अथवा क्लास में आकर सभी को बड़े स्नेह से देखते रहते और हरेक का जड़ फूलों से तुलना करके देखते और फिर बाबा पूछते - `आप कौन-से फूल हैं? किंग ऑफ फ्लावर हो, सदा गुलाब हो, मोतिया हो, कली हो या अक के फूल हो? जैसे मुरझाई कलियां और फूल अपने माली व बागवान को देख नाच उठते हैं, मुस्कराने लगते हैं वैसे ही बाबा जब अपने चैतन्य फूलों को मुस्कराते हुए रुहानी प्रेम से भरे हुए उन नैनों से जिनकी गहराई समुद्र से भी गहरी थी देखते थे तो हम आत्माएं भी बापदादा की पवित्र दृष्टि पड़ते ही खुशी में खिल उठते थे, फूले न समाते थे। विश्व की सर्वोच्च हस्तियां, एक परमपिता परमात्मा शिव और दूसरे प्रजापिता ब्रह्मा के एक ही रूप में दोनों परम हस्तियों से अपने पिता के अति स्नेही और अति निकट सम्बन्ध से मिलना कोई कम सौभाग्य की बात है क्या? वस्तुतः यही तो वास्तविक सौभाग्य है। जिस इच्छा की पूर्ति जन्म-जन्मांतर भक्ति-मार्ग में भी न हो सकी, वह अब सहज ही पूर्ण हुई। अपने पारलौकिक एवं अलौकिक पिता दोनों से पुनः कल्प 5000 वर्ष के बाद ये आत्माएं मिलीं और भविष्य 21 जन्मों के लिये सतयुगी एवं त्रेतायुगी दैवी स्वराज्य का जन्मसिद्ध अधिकार तथा वर्तमान जीवन में `बापदादा' से रूहानी स्नेह प्राप्त कर अतीन्द्रिय सुख के सागर में लहरा रही हैं। ऐसे बागवान व माली के हाथों पालना लेने की इच्छा किसे न होगी और ऐसे विश्व सेवक के साथ विश्व-परिवर्तन के सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय सेवा के कार्य में उनका सहयोगी बनने का मन किसका न होगा! ऐसे पूज्य बनाने वाले अति मीठे, अति स्नेही, करुणा के सागर बापदादा की हम बच्चों को कितनी याद आती होगी?

मुझे इस बात का गर्व है कि मैं भी ऐसे पद्मापदम भाग्यशाली आत्माओं में से एक आत्मा हूँ जो पिताश्री जी के द्वारा शिवबाबा के साथ अपना कल्प पूर्व वाला संबंध जोड़कर ईश्वरीय सुख प्राप्त कर सका। बापदादा को देखते ही मुझे इतनी खुशी, इतना अलौकिक सुख मिलता था कि वह अवर्णनीय है। केवल इतना ही कह सकता हूँ कि खुशी में रोमांच खड़े हो जाते थे। लेकिन कितने निरहंकारी थे बाबा! हम बच्चों के रहने के लिए बाबा ने `पाण्डव भवन' में नए-नए कई मकान बनवाये परंतु स्वयं पुराने मकान में ही रहे। बाबा किसी को भी पांव नहीं पड़ने देते थे और हम बच्चों को नमस्ते करते थे एवं कहते थे - `शिवबाबा का तो पांव नहीं है और फिर आप ही बच्चे तो स्वर्ग के मालिक बनने वाले हैं।

विचित्र बाप की हर बात सारी दुनिया से न्यारी और प्यारी लगती थी और अभी भी जब अव्यक्त रूप से बापदादा से मुलाकात होती है तो भी उनकी हर बात न्यारी और प्यारी लगती है।

अब तो हर बात में निराकारी, निरहंकारी, न्यारे और प्यारे बनकर सारी सृष्टि को पावन बनाने के ईश्वरीय कार्य में पिताश्री जी के समान शिवबाबा की श्रीमत् पर तन-मन एवं धन से सहयोगी बनकर अपने भविष्य का सौभाग्य बनाने में ही कल्याण है।

बड़ौदा। 'तनाव मुक्ति' विषयक कार्यक्रम में ब्र.कु. स्वामीनाथन का स्वागत करते हुए ब्र.कु. राज दीदी।

इन्दौर-नलखेड़ा। आध्यात्मिक एवं व्यसनमुक्ति प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भाजपा जिला उपाध्यक्ष अशोक लोढ़ा, डीलर प्रकाश फाफरिया, ब्र.कु. रुक्मणि व अन्य।

इन्दौर-सुदामा नगर। दीपावली के उपलक्ष्य में आयोजित की गई राधे कृष्ण की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् परमात्म स्मृति में ब्र.कु. शैल, डॉ. सचिन बुरहानपुरकर व ब्र.कु. प्रकाश।

फिरोजाबाद-उ.प्र.। प्रमुख उद्योगपति बालकृष्ण गुप्त जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सरिता।

गुमला-झारखण्ड। भाई दूज के अवसर पर डी.पी.ओ. साहब को आत्मस्मृति का तिलक देते हुए ब्र.कु. शान्ति।

देवघर। 'तनाव मुक्त सकारात्मक जीवन शैली' पर प्रकाश डालते हुए ब्र.कु. भगवान। साथ हैं जैन धर्म न्यास बोर्ड के अध्यक्ष ताराचंद जी व ब्र.कु. रीता।

बुदनी-होशंगाबाद(म.प्र.)। एस.डी.एम. बृजेश सक्सेना को आत्मस्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. सुनीता।

राजकोट-गुज.। गांधी गवर्नमेंट होस्टल में पौधा रोपण करते हुए होस्टल के डायरेक्टर। साथ हैं ब्र.कु. डिम्पल, ब्र.कु. विधि व अन्य।

व्यारा-गुज.। 'तनाव मुक्त जीवन जीने की कला' विषयक शिविर का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. ई.वी. गिरीश,मुम्बई, ब्र.कु. अरुणा, ब्र.कु. प्रीति व अन्य अग्रणी महिलायें।

कोरीवडे-महा.। जिला परिषद विद्यामंदिर हायस्कूल में 'मूल्यों की शिक्षा' विषय पर प्रवचन करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. दत्तात्रय,माउण्ट आबू, प्रिन्सीपल पाटील सर, ब्र.कु. संध्या व शिक्षकगण।

अकलतरा-छ.ग.। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए पूर्व विधायक सौरभ सिंह, ब्र.कु. भुवनेश्वरी, ब्र.कु. ममता व अन्य।

'ब्लैसिंग' से करें जीवन की बैंलेंस शीट ठीक:शिवानी

कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डिस्ट्रीक्ट कलेक्टर रवि कुमार सुरपुर, करियर प्वाइंट इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर ओम महेश्वरी, आई.एम.एम. के प्रेसीडेंट बी.एल.गोचर, ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. हेमलता व ब्र.कु. उर्मिल।

कोटा-राज.। जीवन को देखें, हम इसमें क्या बदलाव लाना चाहते हैं और उसे कौन बदल सकता है। अपने निजी जीवन में या अपने घर के आसपास क्या कभी कुछ ऐसा दिखता है जिसके लिए मन बार-बार कहता है ऐसा क्यों हुआ? ऐसा नहीं होना चाहिए। किसने डिसाइड किया? किसकी याद आती है? उंगली किस तरफ जाती है? उक्त विचार करियर प्वाइंट ऑडिटोरियम में `बैलेंस शीट ऑफ लाइफ' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्र.कु. शिवानी ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि जब कभी बुरा होता है तो हम भगवान को दोष देते हैं कि भगवान ने हमारे साथ ऐसा क्यों किया? अगर भगवान की मर्ज़ी से दुनिया चलती तो क्या ऐसा होता कि किसी के अलग अलग देशों में बड़े-बड़े आलिशान घर हैं और किसी के पास रहने के लिए एक छत भी नहीं। उन्होंने बताया कि जो कुछ हमारे साथ हो रहा है वह हमारे पूर्व कर्मो के रिज़ल्ट अनुसार हो रहा है, उसको ठीक भी मुझे ही करना है। परमात्मा इसमें हस्तक्षेप नहीं करेगा। अगर हम किसी के प्रति नफरत पकड़ के रखते हैं तो हमारे नफरत पकड़ने से बीमार वे नहीं होते लेकिन बीमार, दुःखी, परेशान हम होते हैं। हमारा बी.पी., कोलेस्ट्रॉल बढ़ेगा, रात को नींद नहीं आयेगी। बीमारी को स्वीकार करते लेकिन लोगों को हम क्षमा नहीं कर सकते क्योंकि उनके कर्म का फल उनके सामने आना ही है लेकिन उनको क्षमा करने से हमारा मन शान्त रहता है, बी.पी., कोलेस्ट्रॉल कंट्रोल में रहता है। अगर किसी के प्रति शुभभावना रखते हुए भी सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं आती है तो समझ लेना कि उनके साथ मेरा कैरी फारवर्ड कार्मिक अकाउन्ट है, थोड़ा और ज़्यादा समय लगेगा।

उन्होंने आगे कहा कि जीवन एक सुंदर जर्नी है। लेकिन अगर जीवन को हमने रेस समझा तो आगे जाने की होड़ में हमारा आपसी प्यार, शुभ भावना, सहयोग खत्म हो जायेगा। ऐसे ही चलते-चलते हम कितने निगेटिव कर्म क्रियेट कर देते हैं, फिर उसका परिणाम भी हमें ही भुगतना पड़ता है। मेरा एक कर्म अगर किसी के मन को अशान्त करता है तो वो सारी अशान्ति के वायब्रेशन्स मुझे मिलेंगे और यदि किसी के मन को शान्त करता है, सुख देता है तो ढ़ेर सारी दुआयें हम इकट्ठी करेंगे। जीवन का एक ही लक्ष्य होना चाहिए, दुआएं कमाना। जो धन कमाते वह ज़रूरी नहीं कि दुआयें भी कमायेंगे लेकिन जो दुआयें कमाते वह अपनी क्षमता से कई गुणा ज़्यादा धन कमायेंगे।

ब्रह्माकुमारीज़ का सामुदायिक रेडियो स्टेशन 'मंथन अवॉर्ड' से सम्मानित

श्रीमती अरुणा राय द्वारा मंथन अवॉर्ड प्राप्त करते हुए ब्र.कु. यशवंत पाटील।

नई दिल्ली। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो स्टेशन रेडियो मधुबन 90.4 एफ.एम. ने अपनी समुदायिक सेवा की सफलताओं में एक और नया कीर्तिमान शामिल कर लिया है। डिज़िटल एम्पावरमेंट फाउण्डेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 12वें मंथन अवॉर्ड में ई-कम्युनिटी ब्रॉडकास्टिंग वर्ग में रेडियो मधुबन ने फाइनलिस्ट के रूप में सफलता अर्जित की। इस वर्ष पूरे भारत के सभी सामुदायिक रेडियो स्टेशन में से सिर्फ 3 सामुदायिक रेडियो को यह सफलता प्राप्त हुई है।

रेडियो मधुबन के द्वारा प्रसारित किया जाने वाला कार्यक्रम `आपका स्वास्थ्य आपके हाथ' जो आदिवासी समुदाय के लिए फोन आधारित जागरुकता कार्यक्रम है, उसे यह सम्मान हासिल हुआ। यह कार्यक्रम हर रविवार प्रातः 10 बजे प्रसारित होता है। रेडियो मधुबन के स्टेशन प्रमुख ब्र.कु. यशवंत पाटिल ने सोशल एक्टिविस्ट और मेगसेसे पुरस्कार से सम्मानित आर.टी.आई. एक्टिविस्ट श्रीमती अरुणा रॉय की उपस्थिति में यह सम्मान प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में कुल 13 वर्गों में पुरस्कार वितरित किये गए। जिसमें बंगलादेश और श्रीलंका के भी प्रतिभागियों ने पुरस्कार जीते। यह कार्यक्रम डिज़िटल एम्पावरमेंट फाउण्डेशन, वोडाफोन फाउण्डेशन और पब्लिक इंटरेस्ट रजिस्ट्री के सह प्रायोजन में इंडिया हेबिटेट सेंटर,नई दिल्ली में 2 दिसम्बर 2016 को आयोजित किया गया था।

जागरुकता से होगा बुराइयों का खात्मा

हाथरस। जागरुकता इलाज से बेहतर है। समझदार के लिए इशारा काफी होता है। शिक्षक समाज के लिए आशा के दीपक हैं। पहले स्वयं को अनुशासित रखेंगे तभी विद्यार्थियों के ऊपर प्रभाव पड़ेगा। इसके लिए शिक्षित युवाओं का आगे आना ज़रूरी है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के स्वयंसेवकों द्वारा चलाया जा रहा अभियान प्रशंसनीय है। संस्था के इसी तरह के रचनात्मक गतिविधियों के लिए महाविद्यालय के द्वार हमेशा खुले रहेंगे। उक्त विचार शहर के प्रतिष्ठित पी.सी. बागला महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रामकृष्ण शर्मा ने `मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत' अभियान के अन्तर्गत बी.एड. संकाय के होवनहार शिक्षकों के लिए आयोजित कार्यक्रम में प्रकट किये।

कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए डॉ. शर्मा। साथ हैं ब्र.कु. शान्ता व अन्य।

ब्र.कु. दिनेश ने कहा कि स्वयं में निहित आत्मिक ऊर्जा के प्रति जागरुक होने से मनोबल विकसित होता है जिससे ही व्यसनों से निजात पाया जा सकता है। उन्होंने मनोबल बढ़ाने के लिए राजयोग मेडिटेशन को अपनी दिनचर्या में शामिल करने की अपील की।

क्षेत्रिय संचालिका ब्र.कु. शान्ता ने कहा कि आज की भाग-दौड़ की ज़िन्दगी में धन उपार्जन में युवा अपनी शक्तियों को खर्च करता है। आज आवश्यकता है अपने जीवन में चरित्र को उन्नत करने की, उससे ही व्यसन व बुराइयों से मुक्ति मिलेगी। इसके लिए अध्यात्म सबसे अच्छा सहारा है। आत्मिक स्वरूप की पहचान के साथ परमात्मा के प्रति आस्था रखने और उनके संग का रसास्वाद करने से जीवन में अच्छे संस्कारों का उदय होता है।

उन्होंने आगे कहा कि जैसा हम जीवन का लक्ष्य बनायेंगे वैसा ही हमारा जीवन भी बनता जायेगा। जैसा लक्ष्य होगा वैसे लक्षण खुद-ब-खुद धारण होते चले जायेंगे। उन्होंने आत्मदर्शन, परमात्म दर्शन, लक्ष्य दर्शन पर विद्यार्थियों से विस्तृत चर्चा की।

इस कार्यक्रम में व्यसन मुक्ति शिक्षा के साथ-साथ मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना के लिए धार्मिक सेवा प्रभाग तथा मेडिकल विंग की चित्र प्रदर्शनियाँ तथा फिल्म भी दिखाई गई।

इस अवसर पर डॉ. पी.डी. राठी, विमलेश बहिन, मंजू बहिन, ब्र.कु. गजेन्द्र, मुहम्मद शकील, अम्बुज, सुमन, नीलम, ममता, बेबी, नरेन्द्र, अगम प्रकाश, प्रदीप, रिहाना सहित बी.एड. संकाय के सभी विद्यार्थी उपस्थित थे।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्कः भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 15th Dec 2015
संपादकः ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशकः ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।